



हिमज्योति

सितम्बर 2014

अंक-चतुर्थ



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून



हिमज्योति

सितम्बर 2014

अंक-चतुर्थ

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
उत्तराखण्ड, देहरादून



सत्यमेव जयते

अशोक सिन्हा
महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड

संदेश

हमारे कार्यालय की राजभाषा को समर्पित पत्रिका “हिमज्योति” के चतुर्थ अंक के प्रकाशन पर मुझे प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान होता है। कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभाओं को सार्थक मंच उपलब्ध करवाने में विभागीय पत्रिकाओं की निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उसके साथ ही विभागीय गतिविधियों की पूरी जानकारी भी इन्हीं पत्रिकाओं के माध्यम से प्राप्त होती है। मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल एवं समस्त रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

सुविज्ञ पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव सहर्ष स्वागत है। प्राप्त सुझाव, प्रतिक्रियाएँ ही हमें उचित मार्गदर्शन प्रदान करती हैं और पत्रिका को सुरुचिपूर्ण, संग्रहणीय एवं पठनीय बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाते हुए प्रेरित करती हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि समस्त रचनाकार एवं पाठकगण अपनी सहभागिता नियमित रूप से बनाये रखेंगे तथा राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने में अपना महत्वपूर्ण योगदान पूर्ववत् प्रदान करते रहेंगे।

किसी भी उपलब्धि का मूल आधार परिश्रम व दृढ़ इच्छाशक्ति होती है। हमारे रचनाकार इस कसौटी पर खरे उतरे हैं। राजभाषा के सत्त उत्थान व प्रचार-प्रसार में प्रयासरत हैं। पत्रिका का मूल उद्देश्य अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि करना है।

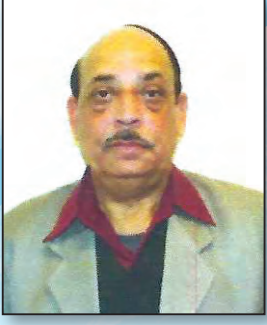
मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय के दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिन्दी को महत्व दें। जिससे हम हिन्दी को वह स्थान दे सकें, जिसकी वह स्वतंत्र भारत में हकदार है।

अ. सिन्हा
संरक्षक एवं निदेशक

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक	: श्री अशोक सिन्हा महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
प्रधान सम्पादक	: श्री पुरुषोत्तम दास उप महालेखाकार (लेखा एवं प्रशासन)
सम्पादक	: श्री महेश कुमार बत्रा उप महालेखाकार (निधि)
सलाहकार सम्पादक	: श्री विनोद कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखाधिकारी
सहायक सम्पादक	: श्री सुशील देवली सहायक लेखाधिकारी
	: श्री महावीर सिंह रावत सहायक लेखाधिकारी
	: श्री गणेश प्रसाद सहायक लेखाधिकारी
मुख्य पृष्ठ	: श्रीनगर शहर, पौड़ी
पार्श्व पृष्ठ	: गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, चौरास, टिहरी
छायाकार एवं ग्राफिक्स संकलनकर्ता	: श्री गणेश प्रसाद सहायक लेखाधिकारी
मूल्य	: राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।



सत्यमेव जयते

पुरुषोत्तम दास
उप महालेखाकार
(लेखा एवं प्रशासन)

प्रधान सम्पादक की कलम से

यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि "हिमज्योति" पत्रिका का चतुर्थ अंक आपके करकमलों में समर्पित कर रहे हैं। हमारे कार्यालय के रचनाकार अपने साहित्य चिन्तन एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के माध्यम से पत्रिका को निरंतर नया आयान देने में सक्षम हुए हैं। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका केवल कुछ पन्नों की एक पुस्तक तक सीमित नहीं बल्कि यह हमारी कल्पनाशीलता, विचारात्मक सोच एवं कार्य के प्रति समर्पण के भाव को प्रदर्शित करती है। हमें खुशी है कि राजभाषा के सतत् उन्नयन एवं सम्मान में पत्रिका एक कड़ी के रूप में अपनी भूमिका अदा करने में सक्षम होगी।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि हमारे अधिकारी/कर्मचारी निष्ठा पूर्वक "राजभाषा" के विकास में हिन्दी को अधिकाधिक महत्व देंगे, जिससे हमें अनुभूति हो सके कि हमारी भी एक राष्ट्रभाषा है।

प्रधान सम्पादक





सत्यमेव जयते

महेश कुमार बत्रा
उप महालेखाकार
(निधि)

सम्पादकीय

यह हमारे लिए खुशी की बात है कि “हिमज्योति” पत्रिका का चतुर्थ अंक आप सभी सुदृढ़ पाठकों को समर्पित कर रहे हैं। कोई भी अभियान किसी जनून और स्वप्न के आगे नहीं बढ़ता है। पत्रिका के लेखकों, रचनाकारों और पाठकवृन्दों के जुनून का ही परिणाम है कि हम राजभाषा के सतत् उन्नयन एवं सम्मान में एक कड़ी के रूप में पत्रिका को प्रस्थापित करने में समर्थ हो रहे हैं।

दृढ़ निश्चय किसी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ने का मौका देता है तथा आत्मविश्वास उसे फलीभूत होने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है। हमारी पत्रिका का आधार ही राजभाषा के प्रति निष्ठा एवं समर्पण है। हमारा सतत् प्रयास रहेगा कि सम्पूर्ण राष्ट्र में हिन्दी का चहुँमुखी विकास हो तथा राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो।

नित प्रयासों से सम्भावनाएं बलवती होती हैं इसी के वशीभूत होकर हमारे कार्यालय में रचनाकारों की श्रृंखला में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, जो हमारे लिए गौरव की बात है। मैं अपने सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने अपनी कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मक शक्ति से अभिभूत किया है। मैं अपने सुधीपाठकों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ कि आपके बधाई सन्देशों ने नित आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। भविष्य में पत्रिका को अधिक परिष्कृत करने हेतु सुधी पाठकों के सुझाव व मार्गदर्शन का हम हृदय से स्वागत करते हैं।


सम्पादक



‘‘विहंगम उत्तराखण्ड’’

चित्रकार-गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी





धराली, उत्तरकाशी
छायाकार: रामबीर सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी

गत वर्ष प्रकाशित 'हिमज्योति' के तृतीय संस्करण के लिए हमने उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं प्राप्त की हैं। प्राप्त प्रतिक्रियाओं में से कुछ का उल्लेख नीचे किया गया है, जोकि हमें 'हिमज्योति' के इस संस्करण के लिए और अधिक प्रयास करने और गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रेरणा एवं विश्वास देती हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक पूर्व की अपेक्षा और अधिक रुचिकर सिद्ध होगा तथा आप इस अंक के सम्बन्ध में अपने अमूल्य सुझाव/प्रतिक्रियाओं से हमें पूर्ववत् अवगत कराएंगे। आपकी प्रतिक्रियाएं हमारे लिए पुरस्कार के समान हैं।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति हमारे कार्यालय में प्राप्त हुई।

पत्रिका एक अत्यधिक आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत की गई है। संकलित की गई रचनाएं एवं विभिन्न छायाचित्र बहुत ही अच्छे हैं। उत्तराखण्ड में आई आपदा का चित्रण श्री भास्करानन्द त्रिपाठी जी के लेख 'रुद्र का रौद्र रूप' में सजीव रूप से किया गया। महावीर सिंह रावत जी की कविता 'कुदरत का कहर' भी हृदयस्पर्शी है। एन०के० सुब्रमनियम का लेख 'हमारे शुभ चिन्ह' एवं कु० रेखा का लेख 'यदि महिलाएं विश्व पर शासन करतीं' भी प्रशंसनीय है।

इस उत्कृष्ट एवं सार्थक अंक की सफलता हेतु कार्यालय परिवार की हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी / हिन्दी,

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)—प्रथम, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

महोदय जी,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की दो प्रतियां प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद! पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक तथा ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री भास्करानन्द त्रिपाठी का लेख "रुद्र का रौद्र रूप", कु० रेखा की कविता "नहीं चाहें उसने", श्री अश्विनी कुमार पांडे का लेख "भारतीय समाज और महिलाएं", श्री अशोक सिंह चौधरी की कविता "बेटी की जुबां", श्री एस०एस० तोमर का लेख "दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियां", श्री सुशील देवली की कविता "हुक्का", श्री अरविंद कुमार उपाध्याय की कविता "सरहद की पुकार", श्री रामबीर सिंह की कहानी "पश्चाताप", श्री एस०जे० राय चौधरी का लेख "मानव मन की अद्भुत शक्तियां", श्री महावीर प्रसाद रावत की कविता "विनाश से विकास की ओर", श्री गणेश प्रसाद की कहानी "बेचारा", श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख "सूचना का अधिकार : एक कारगर एवं प्रभावी कानून", श्री एन०के० सुब्रमनियम का लेख "हमारे शुभ चिन्ह" आदि रचानाएँ बहुत ही सुंदर हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी प्राकृतिक चित्र पत्रिका को सौंदर्य प्रदान करते हैं एवं मुखपृष्ठ तथा अंतिम पृष्ठ भी बहुत ही आकर्षक हैं। श्री गणेश प्रसाद द्वारा बनाया गया चित्र गांव बहुत ही सुंदर है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी,

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)—II, महाराष्ट्र, नागपूर

महोदय,

उपरोक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका की सभी रचनाएँ उत्कृष्ट व ज्ञानवर्धक हैं।

हिन्दी सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। शुभकामनाओं सहित।

लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएँ उच्च स्तरीय एवं प्रेरणास्त्रोत हैं। श्री एस०एस० तोमर द्वारा लिखित लेख "दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियाँ" तथा श्री सुशील देवली की कविता "हुक्का" समाजिक परिवेश को दर्शाता है वहीं, श्री अशोक चौधरी द्वारा रचित कविता "बेटी की जुबाँ" दिल को छू देने वाली है। गृह पत्रिका "हिमज्योति" निरंतर प्रकाशित होती रहे ये हमारी शुभकामनाएं हैं।

लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, (केन्द्रीय प्राप्ति), नई दिल्ली।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा दिनांक 01.10.2013 को जारी पत्र सं० हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/हिमज्योति/2013-14/130 के साथ हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ असंख्य धन्यवाद।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं रोचक, सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषतः महावीर सिंह रावत द्वारा रचित कविता "मुसाफिरखाना" तथा कु० रेखा की कविता "नहीं चाहा उसने" काफी सराहनीय हैं। विनोद कुमार शर्मा द्वारा लिखित लेख "सूचना का अधिकार एक कारगर एवं प्रभावी कानून" काफी ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के इस अंक को उत्तराखण्ड आपदा पीड़ितों को समर्पित किया गया है जो बहुत ही सराहनीय एवं अनुकरणीय कदम है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ तथा प्रकाशित अन्य सभी छाया चित्र काफी आकर्षक एवं मनोहर है।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु संपादक मंडल को धन्यवाद तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं समाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), पं०बं०

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर अपनी भव्यता लिए हुए है, छायाचित्रों ने इसे और भी मनोरम बना दिया है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेषकर श्री इफ्तेखार अहमद की कविता "बचपन की बरसात" एवं श्री अरविन्द कुमार उपाध्याय की कविता "सरहद की पुकार", श्री महावीर सिंह रावत का लेख "समाज का नैतिक पतन", कु० रेखा का लेख "यदि महिलाएं विश्व पर शासन करतीं" एवं श्री एन०के० सुब्रमनियन का लेख "हमारे शुभ चिन्ह" आदि सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। उत्तराखण्ड आपदा से प्रभावित लोगों के प्रति कार्यालय महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान परिवार की ओर से संवेदना व्यक्त करता हूँ एवं शीघ्र पुनर्निर्माण एवं समृद्धि हेतु शुभकामनाएं।

एक श्रेष्ठ और सार्थक अंक के लिए संपादक मंडल तथा सभी रचनाकारों को साधुवाद।

सचिव, प्रधान महालेखाकार एवं
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/रा०भा० अनुभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), राजस्थान।

महोदय,

उपर्युक्त विषय पर आपके पत्र संख्या हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/हिमज्योति/2013-14/77 दिनांक 09.10.2013 के साथ प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका की सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञान वर्धक हैं। नया युग जो आ गया है, विनाश से विकास की ओर, सराहनीय रचनाएं हैं।

आशा है कि पत्रिका के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के कर्मचारियों/अधिकारियों की हिन्दी में मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामनाएँ।

लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा०),
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम, बेलतला, गुवाहाटी-29

महोदय,

हिन्दी गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

उत्तराखण्ड में घटित आपदा पर हम कार्यालय की ओर से अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी विषय पठनीय हैं। विशेष रूप से श्री महावीर सिंह रावत द्वारा लिखित "कुदरत का कहर", श्री अशोक सिंह चौधरी द्वारा लिखित "हिमज्योति" और इफ्तेखार अहमद द्वारा लिखित "बचपन की बरसात" सराहनीय हैं।

पत्रिका की सफल प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल को हमारे कार्यालय की ओर से बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के पत्रांक—हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका 'हिमज्योति'/2013-14/51 दिनांक 08.10.13, पत्रांक—हिन्दी प्रकोष्ठ/गृहपत्रिका 'हिमज्योति'/2013-14/79 दिनांक 09.10.13 द्वारा हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के तीसरा अंक की दो प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अच्छी, प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा व आवरण पृष्ठ बहुत ही आकर्षक हैं। सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादक एवं प्रकाशन समिति के सभी सदस्यगण बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभकामनायें।

वरीय लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), बिहार, पटना,

महोदय,

आपके पत्र सं० हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/हिमज्योति/13-14/91 दिनांक 09.10.13 द्वारा प्रेषित गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई।

पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ/कवितायें रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, शुभकामनाओं के साथ।

स०ले०प०अ०/व०ले०प०अ०/हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखण्ड, राँची

महोदय,

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक, रोचक तथा शिक्षाप्रद हैं। "रुद्र का रौद्र रूप", "नहीं चाहा उसने", "बचपन की बरसात", "हुक्का", "सरहद की पुकार", "मानव मन की अद्भुत शक्तियाँ", "हमारे शुभ चिन्ह", "सूचना का अधिकार : एक कारगर एवं प्रभावी कानून" तथा "पश्चाताप" रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं एवं त्रासदी से सम्बन्धित रचनाएं मर्मस्पर्शी हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन व संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान संपादक, 'आभा'
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
चण्डीगढ़।

महोदय,

आपके पत्र सं०/हि० प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/हिमज्योति/2013-14/60 दिनांक 08.10.2013 के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं राजभाषा गतिविधियों से सम्बन्धित छायाचित्र मनमोहक हैं। इस अंक में समाविष्ट रचनाएं पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री एस०एस० तोमर का लेख दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियाँ, श्री महावीर सिंह रावत का लेख समाज का नैतिक पतन तथा कु० रेखा का लेख यदि महिलाएं विश्व पर शासन करतीं विचारप्रधान लेख हैं। नहीं चाहा उसने, बेटा की जुबाँ, सरहद की पुकार तथा समाज की दुर्दशा कविताएँ प्रशंसनीय हैं। बेचारा तथा पश्चाताप मार्मिक और शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन व संकलन हेतु संपादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/राजभाषा,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०)—प्रथम, मध्य प्रदेश, “लेखा भवन” ग्वालियर।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ‘हिमज्योति’ का तृतीय अंक प्राप्त हुआ है, जिसे पत्र संख्या हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/‘हिमज्योति’/2013-14/दिनांक 01.10.2013 के साथ संलग्न करके भेजा गया है। पत्रिका का कवर-पृष्ठ एवं मुद्रक बहुत ही सुंदर हैं। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं एक से एक बढ़कर हैं। इन रचनाओं में से कुछ रचनाएं ऐसी हैं जो कि बहुत ही रोचक एवं ज्ञान वर्धक हैं, जैसे की श्री अश्विन कुमार पाण्डेय की “भारतीय समाज और महिलाएं”, श्री एस०एस० तोमर की “दहेज कुप्रथा की शिकार बेटियाँ, कु० रेखा की कविता “नहीं चाहा उसने”, श्री गणेश प्रसाद की लेख “बेचारा” जैसी रचनाएँ बहुत पसंद आई हैं।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हमारी शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी/राजभाषा,
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय), बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पुर्व), मुम्बई

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं०: हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका ‘हिमज्योति’/2013-14/102 दिनांक 10.10.2013 द्वारा हिन्दी गृह पत्रिका ‘हिमज्योति’ के तृतीय अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सुरुचिपूर्ण, सरस तथा ज्ञानप्रद हैं। विशेष रूप से श्री भास्करानंद त्रिपाठी, स०ले०अ० की रचना “रुद्र का रौद्र रूप” और “श्री एन०के० सुब्रमनियम” वरिष्ठ लेखाकार द्वारा रचित “हमारे शुभ चिन्ह” तथा कु० रेखा की “नहीं चाहा उसने” एवं श्री अशोक सिंह चौधरी की “बेटा की जुबाँ” कविता दिल को छूने वाली एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले०प०)—1, महाराष्ट्र, मुंबई।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका “हिमज्योति” अंक की पत्रिका प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

व० लेखा अधिकारी/प्रशासनिक,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०) त्रिपुरा-अगरतला

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' का तृतीय अंक पत्र संख्या हिन्दी प्रकोष्ठ/गृह पत्रिका/हिमज्योति/2013-14/131 दिनांक 10.10.13 को प्राप्त हुआ।

पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक एवं रोचक हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत सराहनीय और प्रासंगिक भी हैं।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा,
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा, केन्द्री कोलकाता।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका के तृतीय अंक की प्रति/प्रतियां प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई। पत्रिका की रूप सज्जा तथा रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सक्रियता व राजभाषा निष्ठा की परिचायक है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा तथा उत्साह का संचार होगा।

पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अच्छी, प्रभावी व पठनीय हैं। विशेषकर श्री महावीर सिंह रावत की कविता "मुसाफिरखाना" श्री अशोक सिंह चौधरी की कविता "नया युग जो आ गया" एवं श्री महावीर रावत का लेख "समाज का नैतिक पतन" विचार प्रधान एवं प्रेरक हैं।

संपादक वीरांगना
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)—द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका हिमज्योति के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं आकर्षक एवं पठनीय हैं। मुख्यतः मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षणीय है।

इसके अलावा श्री महावीर सिंह रावत का विनाश से विकास की ओर, कुमारी रेखा की नहीं चाहा उसने तथा श्री गणेश प्रसाद की बेचारा आदि रचनाएं सराहनीय हैं।

अच्छे संपादन तथा साज सज्जा के लिए संपादक मंडल को बधाई।

संपादक "वातायन"/हिन्दी प्रकोष्ठ
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक०), ओड़िशा, भुवनेश्वर

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के तृतीय अंक की एक प्रति प्राप्त हुई, उसके लिए सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएं एवं कहानियां रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के कुशल संपादन हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रभारी हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय भारतीय वन सर्वेक्षण, कौलागढ़ मार्ग।

महोदय,

हिन्दी पत्रिका “हिमज्योति” का आवरण पृष्ठ और अन्दर प्राकृतिक दृश्यों के छाया चित्र मनमोहक हैं। पत्रिका में समाविष्ट लेख एवं कविताएं पठनीय, स्मरण योग्य एवं ज्ञान वर्धक हैं। लेखों में विशेषकर “रुद्र का रौद्र रूप”, “पश्चाताप”, “मानव की अद्भुत शक्तियाँ” तथा कहानी “बेचारा” पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। कविताओं में “मुसाफिर खाना”, बेटी की जुबाँ”, “हुक्का”, “चश्मा” एवं “नया युग जो आ गया” सामयिक एवं यथार्थ हैं।

लेखकों एवं कवियों का शब्द चयन सराहनीय है। नयनाभिराम चित्रण के साथ पत्रिका की साज-सज्जा मनमोहक एवं अतुलनीय है।

सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु शुभकामनाएं।

लेखाधिकारी/हिन्दी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)—द्वितीय, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद।

महोदय,

पत्रिका मुद्रण एवं संपादन की दृष्टि से यह अंक सराहनीय है। पत्रिका में समाहित स्तरीय रचनाओं के लिए चयनकारों को बधाई। श्री महेशकुमार बत्रा का संपादकीय ‘गागर में सागर’ रहा। पत्रिका पृष्ठचयन आकर्षक तथा आलेखों के बीच दिए चित्रों का चयन आलेखों के अनुरूप रहा। टिहरी बाँध एवं पुस्तक का पार्श्व पृष्ठ चित्र मनमोहक रहा।

पत्रिका में सभी रचनाएं सरस हैं फिर भी उनमें श्री अश्विनी कुमार का लेख “भारतीय समाज” बहुत ही प्रेरणादायी सामयिक एवं संस्कारपूर्ण एवं ज्ञानवर्धकता से ओतप्रोत है। साथ ही सुश्री रेखा की कविता “नहीं चाहा उसने” विज्ञानिकता की प्रतीक एवं पाठकों का मन सहज ही मोड़ने वाली रही है। श्री विनोद कुमार शर्मा का सामयिक लेख “सूचना का अधिकार” ज्ञानवर्धक व उनके स्वयं के गहन ज्ञान का प्रतीक है। रचनाकारों, संपादक मण्डल व पत्रिका परिवार को राजभाषा हिन्दी के प्रति इस अतुलनीय निष्ठा के लिए आभार सहित हृदय से धन्यवाद तथा पत्रिका की दीर्घायु प्रदान करने की प्रभु से प्रार्थना के साथ पत्रिका परिवार के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

एम०जे० चंदे

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०),
गुजरात, राजकोट

अनुक्रमणिका

विधा	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
कविता	हमारी प्रिय पत्रिका: हिमज्योति	अजय कुमार पाल	1
कविता	प्रकृति भी माँ का रूप है।	प्रशांत जोशी	2
लेख	नंदा राजजात पर्व का महत्व	महावीर सिंह रावत	3
कविता	जिन्दगी के रूप	शालू जाटव	6
कविता	इन्सानियत	विनोद कुमार शर्मा	9
कविता	दोस्ती का सफर	अशोक सिंह चौधरी	10
लेख	भारतीय संस्कृति का वैज्ञानिक विश्लेषण	प्रवीण मिश्रा	11
कविता	पहचान	एस0एस0 तोमर	13
कविता	गृह प्रवेश	सुशील देवली	14
कविता	प्रकृति का रक्षक	प्रशांत जोशी	15
लेख	स्वच्छता की आवश्यकता	विनोद कुमार शर्मा	16
कविता	एहसास	बबीता	19
लेख	ममता की छाँव	दीपा पंवार	20
कविता	वक्त नहीं	शिवांगी	22
कविता	कारगिल फतह	महावीर सिंह रावत	23
कविता	आभास	अशोक सिंह चौधरी	24
कहानी	लाडली	किरन	25
कविता	खून पसीना	संजय रैणा	27
लेख	अनहद नाद	भास्करानन्द त्रिपाठी	28
कविता	जीवन और अभिमान	विक्रान्त कुमार	30
कविता	बेटी	अशोक सिंह चौधरी	33
लेख	तारीफ बनाम चाटुकारिता	किरन	34
कविता	आइने	सुशील देवली	35
कविता	नारी	राधा राणा	36
गुजल	फतूरे इसाँ ने....	सुशील देवली	37
लेख	संवेदना	रामबीर सिंह	38
कविता	सोने की चिड़िया	महावीर सिंह रावत	39
गुजल	सोचा कभी नहीं	इफतेखार अहमद	40
लेख	महापर्व छठ पूजा	ब्रजेश कुमार	41
सूची	हिन्दी सप्ताह-2013 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतिभागियों तथा उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों का विवरण।	—	43
संकलन	अंग्रेजी शब्दों के सरल एवं उपयुक्त हिन्दी शब्द	विनोद कुमार शर्मा	44
संकलन	कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र	गणेश प्रसाद	45

“हमारी प्रिय पत्रिका : हिमज्योति”



अजय कुमार पाल
लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

कार्यालय की अथक साधना
परिणाम है इसका हिमज्योति ।

बिखरी हुई सरस कृतियों को
सहज भाव से सदा सँजोती ।

विविध विधाओं की यह थाती
मधुमय स्वर में है यह गाती
रचे हुए प्यारे नगमों को
आह भरी भारी कलमों को

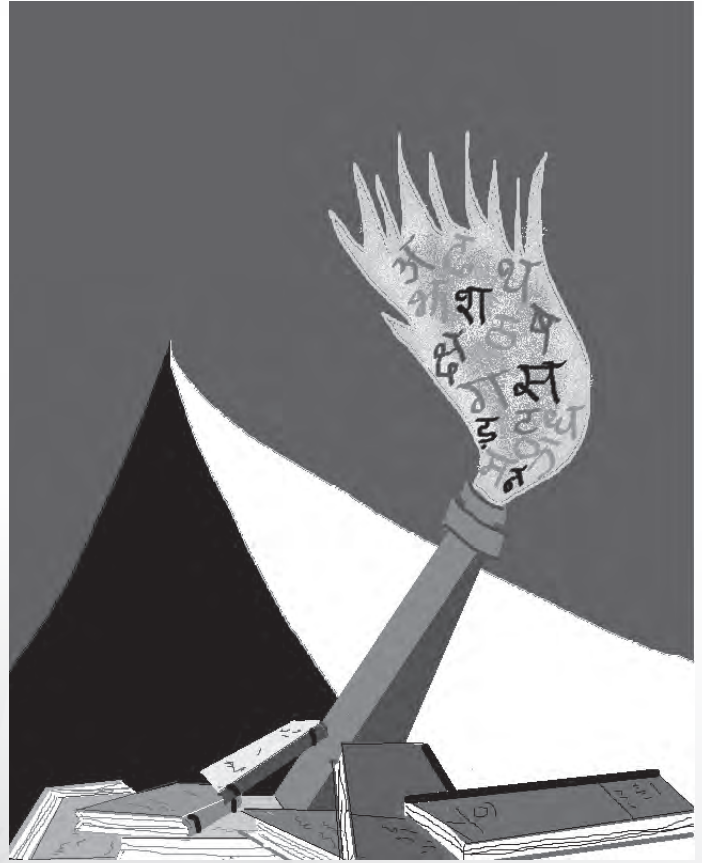
मानस चित्त को सदा पिरोती
परिणाम है इसका हिमज्योति ।

मुखर स्वर है युवा वर्ग का
शांतचित्तता अनुभवियों की
साम्यावस्था के अर्क का
सधे हुए सर्जक कवियों की

अन्तः स्थल के हैं मोती
परिणाम है इसका हिमज्योति ।

‘हिन्दी’ के सेवार्थ समर्पित
मर्म लिए रचनाकारों के
चुने हुए लेखों से सुरभित
रम्य दृश्य हैं फनकारों के

भाषायी कौशल की चुनौती
परिणाम है इसका हिमज्योति ।



सचित्रण: गणेश प्रसाद, स० लेखाधिकारी

“प्रकृति भी माँ का रूप है”



प्रशान्त जोशी
बहुकार्यकर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

प्रकृति का तुम पूरी तरह ध्यान करो।
अपनी माँ की तरह उसका भी सम्मान करो।।
जिस प्रकार माँ तुम्हारा पालन करती है।
उसी प्रकार प्रकृति अन्न से पोषित करती है।।
माँ छोटी-छोटी भूलों को
माफ करती है।
प्रकृति भी छोटी-छोटी भूलों को
नजर अंदाज करती है।।
प्रकृति को तुम जब बहुत नुकसान पहुँचाओगे।
केदारनाथ जैसी महा-त्रासदी हर बार पाओगे।।
प्रकृति का तुम पूरी तरह ध्यान करो।
अपनी माँ की तरह उसका भी सम्मान करो।।



छायाकार: गणेश प्रसाद, स० लेखाधिकारी



“नंदा राजजात पर्व का महत्व”



महावीर सिंह रावत

सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड का हिमालयी कुंभ 18 अगस्त से 06 सितम्बर, 2014 तक पौराणिक स्वरूप में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं साहसिक यात्रा के रूप में मनाया जायेगा। 18 अगस्त 2014 को चांदपुर क्षेत्र के नौटी गाँव से बेटी नंदा की विदाई की शुभ बेला आ चुकी है। बेटी नंदा को उसके ससुराल हिमालय पहुंचाने की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। इस बार लाडली नंदा भगोती (भगवती) को मायके में चौदह वर्ष हो गये हैं, जबकि हर 12वें वर्ष में भगोती नंदा को उसके ससुराल के लिए विदा किया जाता था। पिछले वर्ष उत्तराखण्ड में आयी भीषण आपदा के कारण इस हिमालयी कुंभ को स्थगित करना पड़ा।

किवदन्ती है कि नौवीं सदी में चाँदपुर गढ़ी के राजा कनकपाल के सपने में उनकी कुल देवी ने शिवधाम जाने की इच्छा व्यक्त की। कुलदेवी की आज्ञा के अनुपालन में राजा ने ध्याणी (बहन-बेटी-बुआ) के रूप कुलदेवी को शिवधाम भेजने का आयोजन किया था। तब से यह परंपरा सदियों से सतत् चली आ रही है। आज भी राजवंशज जो कि “कुंवर” कहलाते हैं, डोली-छतोली से नंदा राजजात शुभारम्भ करते हैं। भगोती नंदा को चांदपुर (चमोली) क्षेत्रवासी अपनी ध्याण के समान स्नेह व प्यार करते हैं। पूरे चांदपुर व पड़ोसी अल्मोड़ा जिले के कुछ भागों में यह विदाई समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। जिसे नंदा राजजात कहा जाता है।



छायाकार: संजय सिंह कुंवर, बहुकार्यकर्मी

क्षेत्रवासी अपने मंदिरों में पूजा अर्चना के बाद लोकवाद्यों की धुन पर नाचते-गाते हैं। सारे कुटुंबी अपनी लाडली के विदाई उत्सव में शामिल होने के लिए देश-प्रदेश से छुट्टी लेकर अपने गांवों को जाते हैं तथा अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार अपनी लाडली को सौगात भेंट करते हैं।

पौराणिक लोक मान्यता है कि हिमवत और मैणा की सात पुत्रियां थीं, जिनमें सबसे छोटी पुत्री नंदा थी, जिसका विवाह कैलाशपति शिव से हुआ था। बारह वर्ष पिता हिमवत ने नंदा की कोई सुध नहीं ली थी, तो नंदा ने माता-पिता को आवाज दी।

माता-पिता कुटुम्बियों की खुद (याद) में नंदा रोने लगी, जिससे उसके अश्रु धरती पर गिर पड़े। इस दृश्य को उसके माता-पिता ने सपने में देखा तो माता-पिता चिंतित हो गये, वे नारद जी के पास पहुंचे और अपने सपने की बात उन्होंने नारद जी को बताई। नारद जी ने हेमवंत को सलाह दी कि हेमंत ऋतु में सौगात लेकर नंदा को मनाने कैलाश जाओ, जिससे नंदा माता-पिता को देखकर खुश हो जायेगी। आज इसी लोक परम्परा को कायम रखते हुए ध्याणी को मनाने के रूप में नंदा राजजात का आयोजन किया जाता है। बारह वर्ष में निकलने वाली नंदा राजजात कुरुड़ जाति के निमंत्रण पर आयोजित की जाती है, जिसमें देश-प्रदेश के कई भक्तगण भाग लेते हैं।

दूसरा पक्ष यह भी है कि पूर्व समय में माता-पिता अपनी बेटियों की शादी बचपन में कर देते थे। बेटि को अपने ससुराल पहुंचने के लिए कई नदियों-नालों और पहाड़ों को पार करना होता था। ससुराल दूर होने के कारण उसको अपने मायके की याद-खबर नहीं मिल पाती थी। साथ ही माता-पिता को अपनी ध्याणी की कोई खबर नहीं मिलती थी। ऐसी परिस्थितियों में उसे अपने मायके की बहुत खुद (याद) आती थी। तीज-त्यौहारों पर मायके पक्ष के किसी के न आने पर अश्रु बहाया करती थी। बचपन में शादी होने के कारण ससुराली



छायाकार: संजय सिंह कुंवर, बहुकार्यकर्मी



छायाकार: गणेश प्रसाद, स० लेखाधिकारी

पक्ष द्वारा उसकी देखभाल नहीं की जाती थी। वह बेचारी ससुराल में शुरू के कुछ वर्षों से कष्टकारी जीवन जीती थी। जो प्यार स्नेह उसकी ननदों को मिलता था वह उसके नसीब में नहीं था। उसका जीवन ससुराल में कष्टों से भरा होता था। घर के काम से लेकर पशुओं का चारा उनकी साफ-सफाई खेती का सारा काम बहू के जिम्मे होता था। खाने में भी उसके नसीब में मोटा-सोटा अनाज था। घर में दुधारू जानवरों के होने के बावजूद भी उसके नसीब में दूध-दही-घी नहीं था। उसके हिस्से में छांछ से बना खाद्य पदार्थ छिछोड़ा ही

था। उसका जीवन चक्की के समान चलायमान था, और वह उसमें लगातार पीसती रहती थी। बेटि का मायका लौटने का समय पौष का महीना हुआ करता था, जब पहाड़ों में खेती पाती से सम्बन्धित कोई काम नहीं होता था। फिर माघ मास की पंचमी से वह अपने ससुराल जाने की तैयारी शुरू कर देती थी। माता-पिता अपनी बेटि की विदाई पर उसे अपनी सामर्थ्य के अनुसार वस्त्र, आभूषण, चावल, चूड़ा, आरसा,

रोट, अखरोट, ज़ंगोरे में सम्भाल कर रखी ककड़ी इत्यादि देकर उसको ससुराल विदा करते थे। इस आस में कि अगले वर्ष पौष में फिर उनकी लाडली हंसी-खुशी मायके लौट आयेगी। इसी प्रकार फिर उसकी विदाई करेंगे।

नंदा राजजात 280 कि०मी० लम्बी यात्रा नौटी गांव से शुरू होकर 22 पड़ावों से होमकुंड पहुंचती है, जिसमें अनेकों नदी-नाले, पहाड़, बुग्याल, ग्लेशियर पड़ते हैं। कठिन यात्रा का यह दृश्य हमें अपनी ध्याणियों की याद दिलाता है। इसलिए नंदा को ध्याणी के रूप माना जाता है। यातायात के साधनों के अभाव में पूर्व समय में नदी-नालों, पहाड़ों को पारकर ध्याणी को उसके ससुराल विदा किया जाता था। उसी का अनुसरण करते हुए नंदा को छतोली-डोली और चौसिंग्या खाडू को सजाकर उसकी पीठ पर मायके की सामग्री वस्त्र, आभूषण, खाद्य पदार्थ चावल, चूड़ा, आरसा, ब्योडो, कौणी, ककड़ी, गोदड़ी दाणिम, नारंगी आदि वस्तुओं के साथ विदा किया जाता है।

यह पहाड़ की एक पौराणिक लोक संस्कृति एवं धरोहर है जो हमें सदियों तक संजोये रखनी है। यह वर्तमान काल में भूतकाल की मुश्किलों की याद ताजा कराती है, और हमें अपनी ध्याणी के प्रति स्नेह-प्यार का अवसर प्रदान कराती है।



“जिन्दगी के रूप”



शालू जाटव
बहुकार्य कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

बचपन की जिन्दगी एक अठखेली है।
जवानी की जिन्दगी सबसे बड़ी पहेली है।
और बुढ़ापे की जिन्दगी अपने में ही अलबेली है।
खेल-खेल में बहुत से सवाल पैदा करती है ये जिन्दगी।
जिन्दगी एक पहेली है पर हम सबकी सहेली है।
बहुत से लोग जुड़े हैं इससे फिर भी ये अकेली है।।
और पहेली बनकर जी का जंजाल बनती है ये जिन्दगी।
जीवन का पहिया है जिन्दगी, पर आज सिर्फ रुपया है जिन्दगी।
आज जिसके पास सब कुछ है, उसके लिए फिर भी निराश है जिन्दगी।
और जिसके पास कुछ भी नहीं उसके लिए आस है जिन्दगी।
किसका भाग्य कब पलट जाए समय का विश्वास है जिन्दगी।
सर्दी की रात में सूरज की गरमाहट है जिन्दगी।
हर मौसम का एहसास है जिन्दगी।
खाली समय में बैठना एक ख्याल है जिन्दगी।
हर गम और खुशी में साथ है ये जिन्दगी।
और तू इधर-उधर क्या देखता है।
अपने में देख
एक एहसास है जिन्दगी।





चौरास, टिहरी
छायाकार: गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी



गौरीकुण्ड—गंगोत्री, उत्तरकाशी
छायाकार: रामबीर सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी

“इन्सानियत”



विनोद कुमार शर्मा

वरिष्ठ लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

उस बेहद सर्द शाम को
स्टेशन पर उतरकर
गर्म कपड़ों से लदालद
तेज कदमों से चलते हुए
बाहर जो मैं आया
तेज बर्फीली हवा के एक झोंके ने
पूरे बदन में सिहरन को दौड़ाया।

मैंने गर्म कपड़ों को और कसकर लपेटा
तभी एक कंपकपाती दुर्बल आवाज ने
मेरे तेज कदमों को रोका
“बाबू जी भगवान के लिए—
मेरे बच्चे के लिए कुछ दे दीजिए”
मैं यकायक चौंका
मुड़कर देखा तो एक
फटे-पुराने कपड़ों में
दुर्बल सी काया
गोद में लिए दूधमुँहे बच्चे को
ढकने का असफल प्रयास करते हुए
हर आने-जाने वाले से याचना करते हुए
भगवान के नाम पर भीख मांग रही थी।



मैं अपनी ठण्ड को भूलकर सोचने लगा कि
काश कोई इन्सान
इन्सानियत के नाम पर
एक इन्सान के दर्द को समझ सकता।
एक पल के लिए रुककर
एक दुखियारी की पीड़ा को
कम करने के लिए
कुछ कर सकता।

लगता है इन्सानियत की परिभाषा बदल गई
आज के जमाने में
जो शायद वक्त के
किसी कोने में खड़ी है गुमसुम।
मेरी और तुम्हारी तरह !!!

“दोस्ती का सफ़र”



अशोक सिंह चौधरी
संविदा कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

पल-पल बीतते लम्हें हैं
यादों संग छोड़ जाते हैं
पलटती निगाहों का वो जहाँ
दोस्ती की वो हर यादें हैं वहाँ
एक अन्जानी राह, अन्जान सफ़र
न पता मंजिल का, न रहगुज़र
ठोकर लगती राह में, खुद ही सम्भलना है
अन्जान राहों में अपनो की समझ दे जाता है
मिले जो दोस्त, जब किसी राह पर
लहरों ने न किया, बसेरा किनारों पर
कठिनाइयों के वक्त, कब एतबार हो गया
वो अन्जान कोई, यार अपना हो गया
नया सफ़र, नये दोस्त के संग
अपनों सा सहारा, रोशनी के संग
इस शहर में, कुछ कर गुजरने की जंग
घर से शहर का सफ़र, यारों के संग
वो मौज-मस्ती, वो छिपना-छिपाना
रात भर की जग-हंसाई, वो जोर से चिल्लाना
दोस्ती के इस, रिश्ते को समझना
एक दूसरे के साथ, वक्त बिताना
आज गुजरे वो हर लम्हें, याद आते हैं
यादों के पन्नों में, वो दिन याद आते हैं
पूछता हूँ क्या, आज वो अहसास है
तेरे दूर जाने से, क्यों मन मेरा उदास है



छायाकार: किशोर सिंह कुटियाल, स० लेखाधिकारी

“भारतीय संस्कृति का वैज्ञानिक विश्लेषण”



प्रवीन मिश्रा

लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

भारतवर्ष की सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है। हमारे देश की सांस्कृतिक पहचान विश्व पटल पर विभिन्न कारणों से सदैव प्रखर रही है। इन कारणों में सबसे प्रमुख हमारी संस्कृति का आध्यात्मिक दर्शन है। हमारे आध्यात्मिक दर्शन में आत्मा जोकि उस परम पिता परमात्मा का अंश मानी गयी है, को नष्ट नहीं किया जा सकता। उसका केवल रूप बदलता है अर्थात् प्राणी के जन्म एवं मरण के रूप में वह केवल देह परिवर्तन करती है। आत्मा के इस स्वरूप को हमारे भारतीय दर्शन में सर्वप्रथम दर्शन के रूप में पहचाना एवं स्वीकार किया गया। प्राचीन भारतीय सभ्यता का यह अद्भुत स्वरूप एवं दर्शन को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ने पर हम पाते हैं कि आध्यात्मिक दर्शन जो स्थान आत्मा को दिया गया है वही स्थान आधुनिक विज्ञान में ऊर्जा (Energy) को दिया गया है। आइये, हमारे प्राचीन आध्यात्मिक चिन्तन को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। जिस प्रकार हमारे राष्ट्र के आध्यात्मिक दर्शन के अनुसार आत्मा को खत्म नहीं किया जा सकता है, उसी प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक मतों के अनुसार ऊर्जा को खत्म नहीं किया जा सकता। आत्मा को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही उसे नष्ट किया जा सकता है।

उसी प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक मतानुसार ऊर्जा (Energy) को न तो उत्पन्न किया जा सकता है न ही नष्ट किया जा सकता है। जिस प्रकार आत्मा केवल एक माध्यम के नष्ट होने पर दूसरे माध्यम में प्रवेश करती है अर्थात् एक शरीर के नष्ट होने पर दूसरे शरीर को धारण करती है उसी प्रकार ऊर्जा के भी केवल स्वरूप को ही बदला जा सकता है, जैसे—उष्मीय ऊर्जा को गतिज ऊर्जा में, गतिज ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में, यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में, विद्युत ऊर्जा को प्रकाश ऊर्जा में, प्रकाश ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में, इत्यादि।



हमारे आध्यात्मिक चिन्तन में इस संसार को प्रकाश देने वाले भगवान सूर्य को सभी ग्रहों को, समस्त प्राणी जगत का, पोषणकर्ता माना गया है। सूर्य के द्वारा ही इस संसार के समस्त जीव जगत को पोषण

के लिए जिस ऊर्जा की आवश्यकता होती है वह ऊर्जा उसी सूर्य से प्राप्त होती है। इसी प्रकार वैज्ञानिक आधार पर भी कई वैज्ञानिकों ने स्पष्ट कहा है कि— “The Sun is the Main energy source of all things in various energy cycles” अर्थात् विभिन्न ऊर्जा चक्रों में ऊर्जा का प्रमुख स्रोत सूर्य ही है। जीव विज्ञान के अंतर्गत ऊर्जा चक्र ऊर्जा के सतत् प्रवाह को दर्शाने का एक माध्यम है जिससे स्पष्ट होता है कि ऊर्जा का प्रवाह किस प्रकार होता है। उदाहरण स्वरूप सूर्य से प्राप्त उष्मीय ऊर्जा को पौधे अपने अंदर रासायनिक ऊर्जा के रूप में संचित करते हैं। जो कीट पतंगें इन पौधों को खाते हैं उन्हें ये ऊर्जा प्राप्त होती है।

हमारी प्राचीन संस्कृति में इस जगत के पेड़ पौधों को देवतास्वरूप मानते हुए इन्हें देवों का स्थान दिया गया है। यही नहीं कुछ त्यौहारों में इनकी पूजा-पाठ भी की जाती है। पेड़ पौधों को काटना हमारे धर्म में पूर्णतः वर्जित माना गया है। इन सभी तथ्यों पर जब वैज्ञानिक रूप से दृष्टि डालें तो विज्ञान ये बताता है कि ये पौधे ही हैं जो हमारे सभी जीव प्राणियों को आक्सीजन अर्थात् प्राणवायु प्रदान करते हैं। यहीं नहीं कार्बन डाई ऑक्साइड का अवशोषण करके ये पेड़ पौधे ही हमारे वातावरण को साफ एवं शुद्ध रखने का कार्य भी करते हैं। पेड़ पौधे वातावरण सन्तुलन में भी महत्वपूर्ण योगदान करके हमारे वातावरण को सन्तुलित करते हैं। वर्षा का समय पर होना, समुचित मात्रा में होना भी काफी सीमा तक हरित प्रदेशों पर भी निर्भर करता है। आधुनिक युग में नदियों व नहरों के जल स्तर व कटाव की स्थिति भी काफी चिंताजनक होती जा रही है, जिसके लिए ये हरित जीव जगत ही सीधे तौर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पिछले वर्ष उत्तराखण्ड में घटित हुयी भीषण त्रासदी भी कहीं न कहीं पर्यावरणीय असन्तुलन का ही एक कारण थी।

हमारी प्राचीन संस्कृति में नदियों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। कई नदियों को हमारे ग्रन्थों में माता का स्थान दिया गया है। भारतवर्ष के उत्तरी भागों में मुख्य जीवन धारा मानी जानी वाली नदी गंगा को हमारे धर्म में गंगा माँ की उपाधि से नवाजा गया है। एक नदी की तुलना माँ से करना ये स्पष्ट बताता है कि ये नदियाँ हमारे सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं पारिस्थितिकीय स्थिति में कितना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। अब हम इसके वैज्ञानिक महत्व पर विचार करते हैं। नदियाँ हमारी आर्थिक सम्पन्नता के प्रमुख कारणों में से एक हैं। आज पूर्वोत्तर प्रदेशों की कई नदियों पर राज्यों की जल विद्युत परियोजनायें, बहुउद्देश्यीय योजनायें, पनचक्की परियोजनायें इत्यादि सफलतापूर्वक चल रही हैं। भारत का एक कृषि प्रधान देश होने का प्रमुख कारण इसके उत्तरी प्रदेशों में नदियों का बाहुल्य होने से ही संभव हो पाया है। कृषि प्रधान देशों की कुल सकल धरेलू उत्पाद का प्रमुख हिस्सा इन नदियों के प्रवाह तंत्र पर ही निर्भर करता है।

इस प्रकार हमने भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक चिंतन के विभिन्न पहलुओं एवं तर्कों पर वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण किया और पाया कि हमारी भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और पूर्णतया वैज्ञानिक आधार पर स्वयं सिद्ध है।

“पहचान”



एस० एस० तोमर

कल्याण सहायक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

अपनी राष्ट्रीय भाषा से ही, पहचान है हमारी।
सभ्यता, संस्कारों से भरी है, पहचान हमारी।।
थाती-माटी की सुगन्ध से, पहचान है हमारी।
हिन्दी राष्ट्र भाषा है, देश की पहचान हमारी।।
जन-जन में बोली जाने वाली, भाषा है हमारी।
संविधान में संप्रभुता का भाव है, पहचान हमारी।।
एकता, अखण्डता की पहचान है, भाषा हमारी।
जग में पहचान बनाई है, इसी ने हमारी।।
इस भीड़ में पहचान, खो न जाये हमारी।
जहाँ भाषा के बिना, पहचान नहीं है हमारी।।
अकेले में पहचान, गुम हो न जाये हमारी।
अपनी पहचान बनाने के लिए, भाषा है हमारी।।

—जय हिन्द जय भारत—



“गृह प्रवेश”



सुशील देवली

सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

ये माना इक अर्सा लगा है हमें यहाँ तक आने में।
पर बड़ी मेहनत लगती है, ये खूबसूरत बस्तियां बनाने में।

अभी— अभी तो इक नई सुबह आयी है।
ये जमीं हम सबको करीब पाकर किस कदर मुस्करायी है॥
इसकी मुस्कराहट से जिंदगी यहां मुस्करायेगी।
अब रोज खेलेगी धूप चांदनी हमारे आशियाने में॥

इतना आसां नहीं पूरे कुनबे को इस तरह बसा देना।
मुख्तलिफ तहजीब जुबानों को आपस में मिला देना॥
अब यहीं पे सिंवई ईद की यहीं पे होली मिलन होगा
पकवान दीपावली रमजान के बनेंगे यही रसोईखाने में॥



कारीगरों की खूबसूरत जुगलबंदी से इमारतें निखर आयी हैं।
लगता है सितारों की गोद से खूबसूरत बस्तियाँ उतर आयीं हैं।
काबिले तारीफ मिलाया है जिस तरह ईंट गारों को।
वरना थक जाती हैं अंगुलियां इक—इक पत्थर तराशने में।

आज का ये खास दिन, दिन है गृह—प्रवेश का,
सुंदर सलोना यह परिसर रहेगा अब्बल उत्तराखण्ड प्रदेश का
बस चाहिये आशीर्वचन हमें, अपने काबिले एहताराम से
बरसों बरस बाद मनेगा जलसा खुशियों का इस घराने में॥

(रचयिता द्वारा यह कृति भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के आवासीय परिसर के उद्घाटन के अवसर पर भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के देहरादून आगमन पर लिखी एवं सुनाई गई थी)

“प्रकृति का रक्षक”



प्रशान्त जोशी
बहुकार्य कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

काल है, त्रिकाल है, साक्षात् महाकाल है।
सृष्टि का रक्षक, वह प्रलयकाल है।
जीव में, निर्जीव में, कण-कण में व्याप्त है।
भक्तों का रक्षक, धरता रूप विकराल है।
धर्म में, कर्म में, न्याय के जो साथ है।
उन जीवों का रक्षक, दुष्टों का काल है।
अधर्म, अकर्म, अन्याय के जो साथ है।
पृथ्वी का रक्षक, दुष्टों का काल है।
अघोर है, रुद्र है, भस्म से जो शुद्ध है।
देव में जो उत्तम है, आराध्य जिनके पुरुषोत्तम हैं।
काल है, त्रिकाल है, साक्षात् महाकाल है।
सृष्टि का रक्षक, वह प्रलयकाल है।



“स्वच्छता की आवश्यकता”



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

स्वच्छ भारत अभियान हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ एवं समाज के प्रत्येक वर्ग को लाभान्वित करने वाला अभियान है। यह सर्वविदित है कि उत्तम स्वास्थ्य होने पर ही जीवन की महत्ता है एवं यदि कोई व्यक्ति रोगग्रस्त है तो जीवन में समस्त सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण होने के बाद भी उसके जीवन में निराशा के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि यदि हमारा वातावरण साफ-सुथरा होगा तो हम निश्चित रूप से प्रत्यक्ष लाभान्वित होकर स्वयं को स्वस्थ अनुभव करेंगे तथा दूषित वातावरण जनित अनेक रोगों से अपना बचाव कर सकेंगे। अतः स्वच्छ भारत अभियान में हम सभी की उत्साहजनक तरीके से भागीदारी अपेक्षित है। यह उत्साहजनक है कि इस अभियान ने बड़े-छोटे के सभी भेद को खत्म करते हुए, इसे प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य बना दिया है।



स्वच्छता के प्रति हमारी भागीदारी हमें बापू के सपनों से भी जोड़ती है। इस अभियान की सफलता बापू के सपनों को साकार करना भी होगा। प्रत्येक नागरिक को, चाहे वह समाज के किसी भी क्षेत्र से जुड़ा हो, समाज में हमारी पद-प्रतिष्ठा कुछ भी हो, हमें सभी संकीर्णताओं से ऊपर उठकर इस अभियान में सकारात्मक रूप से अपना योगदान देना होगा। यह हमारे समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत भी होगा। स्वच्छता का कार्य सिर्फ स्वच्छकों का कार्य न होकर आम नागरिक का दायित्व है एवं मात्र स्वच्छकों के भरोसे इस कार्य को छोड़कर आम नागरिक के कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। कम से कम हम अपनी ओर से यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सार्वजनिक स्थलों पर गन्दगी न करें तथा अपने आस-पास के वातावरण को यथासम्भव साफ-सुथरा रखें। मात्र इतना सुनिश्चित करने से ही अभियान के उद्देश्यों को काफी हद तक सफलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है। स्वच्छता को हमें अपनी दिनचर्या में शामिल करना होगा तथा इसके प्रति पर्याप्त सजगता प्रत्येक समय बनायी रखनी होगी।

उपर्युक्त को दृष्टिगत रखते हुए स्वच्छता कार्यक्रम में हम सभी की भागीदारी अपेक्षित है। अभियान में सभी नागरिकों की भागीदारी होने पर हमारे देश को स्वच्छ भारत बनने से कोई नहीं रोक सकता। आने वाला वह दिन निश्चित ही हमारे देश के लिए विश्व में गौरव प्रदान करने वाला दिन होगा।



मुखवा गाँव, उत्तरकाशी
छायाकार: रामबीर सिंह, वरिष्ठ लेखाधिकारी



छोटा कैलाश, जोलीकांग, पिथौरागढ़
छायाकार: किशोर सिंह कुटियाल, सहायक लेखाधिकारी



भागीरथी एवं अलकनन्दा नदियों का संगम देवप्रयाग, टिहरी
छायाकारः गणेश प्रसाद, सहायक लेखाधिकारी



कोटी गाँव, पिथौरागढ़
छायाकारः किशोर सिंह कुटियाल, सहायक लेखाधिकारी

“एहसास”



बबीता

बहुकार्य कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

जी ले तू जिन्दगी
जीने का नाम है जिन्दगी
खुशी हो या गम
फिर भी
जी ले तू हर दम।

जी ले तू जिन्दगी हर पल
न जाने कब खत्म हो जाए ये पल।

जी ले तू जिन्दगी हर एहसास में, जीत हो या हार
फिर भी ना मानना जिन्दगी से हार।

जी ले तू जिन्दगी इस तरह
जैसे पतझड़ के बाद आता है सावन।

जी ले तू भी जिन्दगी इस जमाने में,
लेकिन निस्वार्थ, परोपकार और परमार्थ के लिए
फिर देख जिन्दगी जीने का सुख और परम आनन्द।



“ममता की छाँव”



दीपा पंवार,

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

माँ बनने का अहसास क्या होता है, ये जब खुद माँ बनी तो ठीक से समझ में आया। वो नहीं जान जब इस दुनिया में आई, तो उसकी किलकारियों ने मेरे सारे दुखों को हवा कर दिया। मुझे लगा जैसे मैं दुनिया की सबसे खुशकिस्मत लड़की हूँ। अपनी गोद में पहली बार उसे उठाया, तो आँखों से आँसू छलक पड़े। उसका स्पर्श अन्तःहृदय तक महसूस किया मैंने। उस दिन लगा मानों जिन्दगी को जीने के सही मायने मिल गए।

आज ईरा एक साल की है और मेरी दुनिया बन चुकी है। वो रोती है, तो मुझे तकलीफ होती है। वो हंसती है, तो लगता है मानो मेरे चारों तरफ सितारें जगमगा रहे हैं। उसके लिए रातों को जागने में भी असीम सुख मिलता है। खुद की तकलीफें, परेशानी अब महसूस नहीं होती, बल्कि न जाने कहां से मेरा धैर्य और सामर्थ्य अचानक बढ़ा हुआ महसूस होता है। उसकी शरारतें दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं, जो मुझे अजीब सी संतुष्टि देती हैं। हर दिन उसका कुछ न कुछ नया करना, मुझे खूब लुभाता है।



कभी-कभी डरती हूँ कि कहीं मेरे पीछे उसे कोई परेशानी न हो जाए, पर फिर मन को समझाती हूँ, अरे! वो तो मुझसे भी ज्यादा सुरक्षित हाथों में है, मेरी अपनी माँ के पास, उसे कैसे कुछ हो सकता है। वो न होती, तो ऑफिस में इतनी निश्चिन्त कैसे रह पाती मैं, कैसे यहां के अपने कर्तव्यों को पूरा कर पाती। अपने दिमाग को अक्सर ये सब समझाते हुए ऑफिस के लिए निकलती हूँ, तो ईरा छोटे-छोटे पांवों से चलकर मुझे बाय करने सीढ़ियों तक आती है। इस वक्त खूब प्यार आता है उस पर। कभी मूड होता है, तो बाय कर देती है, हंसते हुए, नही तो बहुत बार मम्मी-पापा जबर्दस्ती उसे मेरी गोद से लेते हैं। उसे रोते हुए छोड़कर आना खुद को सजा सा लगता है।

सोचती हूँ, क्या हर माँ ऐसा ही महसूस करती होगी जैसा कि मैं, या मैं असामान्य हूँ? क्या मेरी माँ ने भी मुझे इतने ही प्यार से, दुलार से पाला होगा? पर उनके तो तीन बच्चे थे, हर बच्चे को बराबर प्यार

कर पाई होंगी वह? तब समझ में आता है कि प्यार जताने का एक ही तरीका नहीं होता। घर से भूखे पेट निकलने पर उनका खूब चिल्लाना, मेरे प्रति प्यार ही तो था। मेरे घर देर से लौटने पर उनके चेहरे पर दिखने वाली चिन्ता, मेरे प्रति केयर ही तो थी। आज उनका मुझ पर हाथ उठाकर बाद में खुद रोना याद आ रहा है। आज समझती हूँ कि क्यों बीमार हैं। क्यों आज भी मेरी आँख में तैरता एक भी आँसू उन्हें बेचैन कर देता है। क्यों आज भी उन्हें बस मेरी खुशी की परवाह है।

आज मुझे यह बात सौ फीसदी सही लगती है कि माँ के चरणों में स्वर्ग होता है, वह ईश्वर का दूसरा रूप है। उसका कर्ज हम कभी नहीं चुका सकते। आज मैं एक माँ की बेटी भी हूँ और खुद एक माँ भी हूँ। ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि किसी बच्चों के सिर से उसकी माँ का आंचल न छिने। वह ममता की छाँव से अछूता न रहे क्योंकि माँ के आँचल की छाँव न केवल हम पर ढेर सारा प्यार लुटाती है और हमें हर दुख से बचाती है, बल्कि हमें हिम्मत और मजबूत इरादों के साथ हर मुश्किल का सामना करना भी सिखाती है।



“वक्त नहीं”



शिवांगी,

बहुकार्य कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

हर खुशी है लोगों के दामन में,
पर जीने के लिए वक्त नहीं।।

दुनियाँ दिन-रात दौड़ती है,
पर जिन्दगी के लिए वक्त नहीं।।

माँ की लोरी का एहसास तो है,
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।।

गैरों की क्या बात करें,
जब अपने लिए ही वक्त नहीं।।

नींद है भरी आँखों में,
पर सोने के लिए भी वक्त नहीं।।

दिल है ग़मों से भरा,
पर रोने के लिए भी वक्त नहीं।।

दुनियाँ लालच के लिए दौड़ती है,
पर थमने के लिए वक्त नहीं है।।

पराये एहसासों की क्या कद्र करें,
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं।।

सारे रिश्तों को तो हम भूल चुके हैं,
पर उनको दफनाने का भी वक्त नहीं।।

सारे रिश्ते नातों का ख्याल है हमें,
फिर भी उन्हें निभाने का वक्त नहीं।।

हर खुशी है लोगों के दामन में,
अब तू ही बता दे,
क्या तेरे पास वक्त है।।



“कारगिल फतह”



महावीर सिंह रावत,
सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

सतत् नमन मेरा, सतत् मेरा प्रणाम
मातृभूमि के, वीर रणबांकुरों को
साहस-शौर्य के, परम प्रतापों को
सतत् नमन मेरा, सतत् मेरा प्रणाम।

दोस्ती का पैगाम, पड़ोस में ले गये
दगा पड़ोसी दे गया, धोखा हम खा गये
चाल समझ न सके, बहकावे में आ गये
दोस्ती के पैगाम को, वे रण में बदल गये। सतत्.....

शांति का पाठ हमारा, हमारे पास रह गया
हम पड़ोस में थे, पड़ोसी सीमा लांघ गया
हमारे जज्बातों से खेल, वह शैतान हो गया
कारगिल में पहुँच, हमें चुनौती दे गया। सतत्.....

रण के रणबांकुरे हमारे, दुश्मन का हौसला पस्त करेंगे
वीरता की मशाल, रणभूमि में जलायेंगे
दुश्मन के नापाक इरादों को, चकना चूर करेंगे
जब तक तन में सांस, मातृभूमि की रक्षा करेंगे। सतत्.....

दुश्मन शीश पर, हमारे बैठा था
बंकर बनाये वहां, सीना ताने खड़ा था
वीर जवानों को, ललकार रहा था
कितना शौर्य है, गोले पर गोले दाग रहा था। सतत्.....

माँ के वीर सपूतों ने, हिम्मत नहीं हारी
शीश में बैठे दुश्मन की, चुनौती स्वीकारी
माँ के सपूत थे खाई में, ऊँची थी पहाड़ी
बढ़ चले आगे, दुश्मन की कितनी गोली खाई। सतत्.....

कितने साथी शहीद हुए, पीछे मुड़कर नहीं देखा
मातृभूमि की आन में, सम्भाला हर मोर्चा
गोले दुश्मन ने कितने दागे, मन में नहीं सोचा
बढ़ चले आगे, कारगिल फतह की सोचा। सतत्.....

माँ के वीर सपूत, ऊँची पहाड़ी पर चढ़ते रहे
सीना छलनी हुआ, अन्तिम सांस तक लड़ते रहे
मातृभूमि की आन में, जीवन कुर्बान कर गये
धन्य, माँ की सन्तानें, जो माँ पर शहीद हो गये। सतत्.....

कारगिल फतह कर, दुश्मन का किया सफाया
मातृभूमि के रणबांकुरों ने, माँ का आशीष पाया
शीश ऊँचा माँ का हुआ, सम्मान पाया सारा
वीर सपूतों ने जब, लहराया तिरंगा प्यारा। सतत्.....



“आमास”



अशोक सिंह चौधरी,
संविदा कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

पास होते हुए भी, कोई पास नहीं
शिकायत तो बहुत है, मगर उदास नहीं
चलते-चलते, कहीं दूर चले आये
अब ठहरने का कोई, आशियां नहीं
रोशनी कम थी मगर, इतना तो अंधेरा न था
दिखाई जो देता सामने, पर पहचानता नहीं
बेखबर तो जमाने से, हम न थे
मगर अपना भी तो कोई, हमसफ़र नहीं
तुम आओ न आओ, तुमसे शिकवा नहीं
बोलना तो तुम चाहते हो मगर, बोलते नहीं
वो दर्द जो, दिल को चोट दे गया
चुभन से जख्म दे गया, मगर दर्द नहीं
एक लम्हा जिससे बिछड़ना, भी गवारा न था
बिछड़ गया जबसे, लौटा अभी नहीं
जिन्दगी जहाँ से चली, फिर वहीं आकर थमी
मुश्किल हालातों को अब, कोई पूछता नहीं
ख्वाबों ने रात भर, आँखों को खूब सताया
सुबह उठकर देखा तो, कुछ सामने नहीं
कश्ति का अपना तजुर्बा है, दरिया में
सफ़र में हर रोज मंजर, बदलते नहीं
सीख जाता है राहगीर, राह की ठोकर खाकर
मगर मैं तकलीफ़ों से, आजाद नहीं
मुझसे हर वज़ह की, सवालियत उसने किये
वज़ह क्या थी, उसने कभी बताया नहीं
गैरों से सुना तुमने, गैरों को अपना समझा
कुछ का भी मुझसे होता, क्यों जाने कहा नहीं



“लाडली”



किरन,

पत्नी, श्री पुरुषोत्तम दास
उप महालेखाकार (लेखा एवं प्रशासन)

सहेलियों ने मेरे पोर-पोर पर मेहन्दी रचा दी, मेरी मांग सिन्दूर से भर दी, मुझे गहनों से लाद दिया और मैं दुल्हन बन गई। आंगन में ढोलक की थाप गूँज रही थी। सभी सहेलियाँ पिया मिलन के गीत गा रही थीं। मैं बहुत खुश थी। सहेलियों से किसी ने कहा, अरे कोई जाकर देखो दुल्हन तैयार हुई कि नहीं, जिसे सुन्दर मुखड़ा देखना हो अन्दर आए। न जाने कितनी औरतों ने मुझे देखा और मेरी सुन्दरता को निहार कर मेरी तारीफ की तभी यकायक कमरे में पैरों की उदास चाप सुनी। बूढ़ी कलाइयों से खेलती चूड़ियों ने साज बजाया और धीरे से मेरा चेहरा दो रूखे हाथों ने ऊपर उठाया। यह तो अम्मा है मेरी प्यारी माँ। मेरे गले से कई प्यारे शब्द बाहर आने को व्याकुल थे पर आंसुओं के आगे बेबस थी। मैं एकटक उन्हें देखती रही, ये अचानक इतनी बूढ़ी कैसे हो गई। चेहरे पर दुख की छाप कैसे आ गई। फिर अचानक दिल से आवाज आई यह तुम्ही तो हो जिसे पालने पोसने में मेरी अम्मा ने इतनी यातनायें उठाईं। अपना पेट खाली रख कर मुझे खाना खिलाया। खुद गीले में सोई मुझे सूखे में सुलाया। क्या इसी दिन के लिए इतनी यातनायें सहती हैं? तभी किसी की आवाज आई रोओ मत बहन ये तो दुनियाँ की रीत हैं। लड़कियों को पालो और गैरों के हवाले कर दो।



छायाकार: गणेश प्रसाद स० लेखाधिकारी

सभी अम्मा को सांत्वना दे रहे थे पर सांत्वना ऐसी कि मन और जोर से रोने लगता। मुझे अब अपने ब्याह की खुशी से ज्यादा इस बात का दुख था कि मेरी माँ मुझसे बिछड़ रही है।

मेरा अस्तित्व मेरे आसुओं में बहने लगा। तभी मजबूत व बूढ़े हाथों ने, मुझे थाम लिया। रोओ नहीं बिटियां इसी दिन के लिए तो मैं जी रही थी कि तुम्हें अपने घर जाते देख सकूँ। एक माँ की सबसे बड़ी खुशी यही होती है कि वो अपनी बेटी का घर बसा हुआ देख सके। शब्द सिसकियों में टूटे जा रहे थे। मगर वह मेरी तसल्ली के लिए न जाने क्या-क्या कहती रही और मैं चीख मार कर उनसे लिपट गई।

माँ मैं कहीं नहीं जाऊँगी। अम्मा मुझे अपने पास रहने दो।

सुसराल में 15 दिन हो चुके थे, समय हर घाव भर देता है। आश्चर्य हुआ कि विदाई के समय इतना रोने वाली लड़की यहां आने के बाद धीरे-धीरे अम्मा को भूलने लगी। यह सोचते ही मैं खुद को दोषी महसूस करने लगी। कभी लगता इतने सालों पुराना रिश्ता अचानक 15 दिन पहले बने रिश्ते के नीचे कैसे दबने लगा? मेरे उदास होने पर मेरा मन बहलाने के लिए मेरे पति मुझे बाहर घुमाने ले जाते तो फिर मेरा मन अम्मा की यादों पर परदे डालने लगता।

जिन्दगी सही से चलने लगी। तभी एक दिन अम्मा का पत्र मिला जिसमें उनकी शिकायत थी कि सुसराल जाते ही मैं उन्हें भूल गई। पत्र पढ़कर मेरा मन विचलित होने लगा और माँ से मिलने के लिए आतुर हो उठा। तभी पति ने मेरा टिकट करा दिया और मैं मायके पहुँच गई। माँ से मिलकर अच्छा लगा। अपना बचपन लौट आया फिर वही गलियों में उछलना व पेड़ों पर चढ़ना याद आ गया। तभी एक पड़ोस की मौसी आई उन्होंने मुझे कुछ बातें बताई कि अब तुम्हें भागना दौड़ना नहीं चाहिए, आराम से कदम उठाने चाहिये सुनकर मैं शर्माई और तब मुझे पता चला कि माँ बनने का अभूतपूर्व सुखद अहसास मन को कितना पुलकित करता है। पति मुझे वापस लेने के लिए आ गये पर मेरे मन में अब हर वक्त यही डर रहता और मैं भगवान से प्रार्थना करने लगी, हे भगवान मुझे बेटा ही देना, बेटा नहीं अगर बेटा होगी तो उसे भी एक दिन मेरी ही तरह अपनी माँ को छोड़कर जाना होगा। धीरे-धीरे समय बीतने लगा। मन में डर व चिन्ता भी बढ़ने लगी। मुझे लगने लगा जैसे अब कहीं न कहीं मुझमें मेरी माँ दिखने लगी, जो अपनी बेटा के लिए कितनी व्यथित रहती थी।

एक दिन अस्पताल जाने का समय आ गया। डाक्टर मुझे आपरेशन थियेटर में ले गये। पति दरवाजे पर खड़े थे अम्मा सिरहाने बैठी थी। न जाने कितनी सदियां बीती उन कुछ पलों में और फिर नहीं सी चीख ने मेरे कदमों तले स्वर्ग के निर्माण का समाचार सुनाया। लेडी डाक्टर ने हंसकर कहा “नहीं मुन्नी प्यारी बेटा मुबारक हो” अम्मा ने मुझे पलट कर देखा। अन्जाने भय ने मुझे दबोच लिया। यह माँ जो आज इस तरह असहाय होकर मेरे सामने खड़ी है, जिसने अपना चैन खुशियाँ और अपना पूरा जीवन मेरे लिए तज दिया। समय फिर उसी कहानी को दोहरायेगा क्या? आने वाले साल उसी तरह मेरा रस निचोड़ लेंगे! मैंने सोचा। क्या मेरी बेटा भी उन्हीं पद चिन्हों पर चलेगी? दिल से आंसुओं का बादल सा उठा। आंसू लपकने को हुए ही थे कि नर्स ने बच्ची को मेरी बगल में लिटा दिया। मैंने उसकी मोहनी सूरत देखी तो धड़कते दिल को सुकून मिल गया। “यह कौन सी नई बात है, यह तो इस सृष्टि की एक अमूल्य सृजनात्मक रचना है”

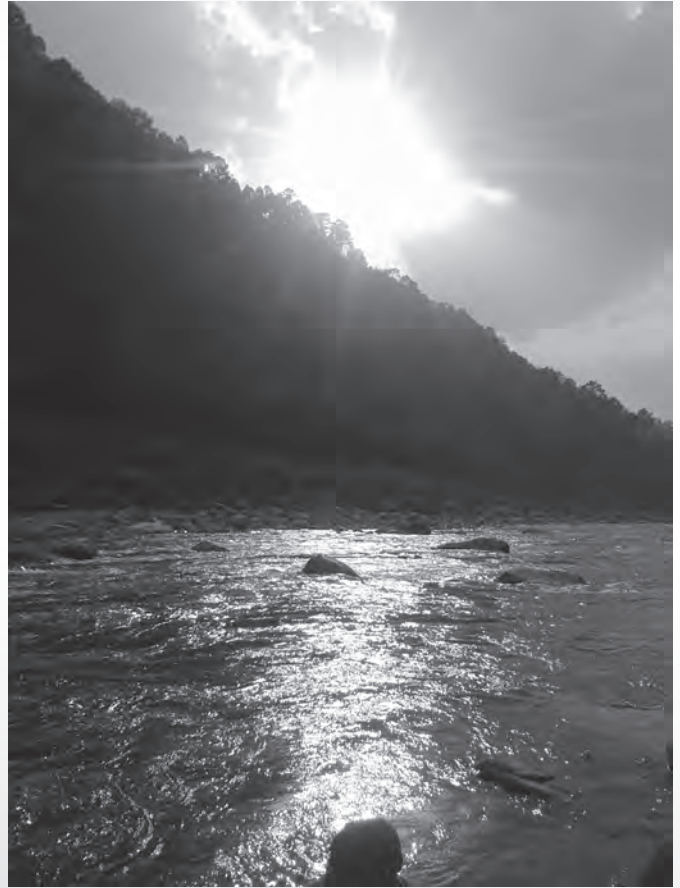
मैंने खुद को तसल्ली दी और नहीं सी जान को कलेजे से लगा लिया।

“खून पसीना”



संजय रैणा,
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

चमकने को तो मोती हूँ
टपकता हूँ तो बस पानी।
प्यासा हूँ। नदी नाले
तो क्या समन्दर बहाता हूँ!
भूख हूँ।
बन्जर बहुत लहलहाता हूँ!
खानाबदोशी मुकद्दर मेरा
बस्तियाँ विशाल बसाता हूँ!
फूल हूँ
पत्थर तोड़ देता हूँ
हूँ पत्थर तो दिन रात
शीशे उछाल लेता हूँ!
है मेरे दम से ही जग में
यह चमक ये धमक।
ये ऊँची ऊँची उड़ान,
ये गगनचुम्बी उठान!
मैं क्या हूँ,
किस किस के लिये हूँ?
मन में अपने डूबकर
जब कभी सोचता हूँ,
बस यही पाता हूँ
खूने जिगर से है रिश्ता मेरा,
अंग अंग से है आशनाई।
शरू से रहा है यही रिश्ता,
बहुत दूर तक जायेगी यह खुदाई।



छायाकार: गणेश प्रसाद स० लेखाधिकारी

“अनहद नाद”



भास्करानन्द त्रिपाठी,
सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

जीवन में आलोचनाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी प्रतिवाद, अथवा आलोचना के बिना मानव जीवन ही नहीं अपितु धर्म, साहित्य, संस्कृति भी जड़वत् हो जाती है। आलोचनाओं व प्रत्यालोचनाओं को समुचित स्थान मिलना ही चाहिये, जिससे जीवन प्रवाहमान बना रहे। तर्क व वितर्क ही समाज व मनुष्य को किसी अन्तिम समाधान की ओर ले जाने में सक्षम है।

ईश्वर है या नहीं? यह बुद्धिवादियों के लिये हमेशा तर्क का विषय रहा है। ईश्वर को मानने वाले आस्तिक एवं न मानने वाले नास्तिक कहलाते हैं। नास्तिकों का मानना है कि ईश्वर जैसी कोई सत्ता है ही नहीं वह तो एक विश्वास मात्र है। मनुष्य स्वयं को ईश्वर जैसी किसी सर्व शक्तिमान सत्ता के अधीन इसलिए कर देता है, क्योंकि वह असुरक्षित है। वह दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों से घिरा हुआ है। इन त्रितापों से वह संघर्ष करता रहता है और प्रायः हार जाता है। इसलिए वह एक ऐसे सर्वगुण सम्पन्न वृहत्तर सत्ता की शरण में जाकर स्वयं को निरापद और भयहीन महसूस करता है जो, सर्व शक्तिमान है, सर्वश्रानी है। सर्वत्र व्याप्त है। दया का सागर है। सर्वोच्च न्यायाधीश है अर्थात् सभी गुणों से सम्पन्न है।



नास्तिकता तब जन्म लेती है जब, अनुभूतियाँ व प्रत्यक्षीकरण आशाओं व मान्यताओं पर खरी नहीं उतरती हैं। उदाहरण के लिये, 16 जून 2013 की रात्रि में उत्तराखण्ड के केदारनाथ में घटित विभीषिका हमें अनास्था के चक्रव्यूह में फँसा देती है। सभी लोगों का यह विश्वास था कि वहाँ शिव रूप में ईश्वर जैसी कोई सत्ता अवश्य है, जो शक्तिशाली है। महाज्ञानी है। दयालु भी है। ऐसी सर्वगुण सम्पन्न सत्ता के भरोसे रहने वाले लोगों को चिन्तित होने की क्या आवश्यकता हो सकती है, लेकिन तब आस्था और विश्वास धराशायी हुये थे। दुर्बल, सबल, दोषी, निर्दोष बच्चे-बूढ़े, महिलायें-पुरुष, यहां तक कि निरीह जानवर तक काल के मुँह में समा गये थे। उन्होंने अवश्य ही उस समय उस सर्व शक्तिमान ईश्वर को याद किया होगा। सहायतार्थ बुलाया होगा। दया की भीख भी माँगी होगी, परन्तु कोई नहीं आया। तब क्या

ईश्वर निष्ठुर है? तर्कों की कैंची आस्था को तार-तार करने के लिए काफी है। इस प्रकार का प्रत्यक्षीकरण अनास्था को जन्म देने के लिए भी काफी नहीं है?

क्या निरीह बच्चे व मूक जानवर भी दोषी हो सकते हैं? यहाँ तक कि वे जीव, जन्तु, प्राणी जिन्होंने अभी जन्म ही नहीं लिया था, वे गर्भस्थ शिशु जिन्होंने अभी कोई पाप या अधर्म किया ही नहीं था, सभी मौत के मुँह में समा गये थे, जिनका कोई दोष नहीं था। वे दण्ड के भागीदार क्यों बने? सारे आर्तनाद एक कृपालु और परम दयालु ईश्वर के सामने निःसार क्यों हो गये?

यदि ईश्वर जैसी कोई सर्वव्याप्त, सर्वशक्तिमान व दयालु सत्ता है तो उन बच्चों को यह क्यों नहीं बताती है कि जिनके माता-पिता जो आज तक लापता हैं, कहाँ हैं? हैं, भी या नहीं? उनका इन्तजार न करें। उस विभीषिका के घटित होने का एहसास भी सर्वज्ञानी सत्ता को अवश्य रहा होगा, तो फिर उन लोगों को घटना के घटित होने की सूचना या एहसास क्यों नहीं करवाया गया? यही तर्क ईश्वर के दयालु व सर्वज्ञानी होने के गुणों को झूठा सिद्ध करते हैं। ये सभी तथ्य एक आस्तिक व्यक्ति के मन में अन्तर्द्वन्द्व पैदा करते हैं, जहाँ से अनास्था का चक्र प्रारम्भ होता है।

ईश्वर के होने अथवा न होने का द्वन्द्व अनेकों यक्ष प्रश्न खड़े करता है। यही होने अथवा न होने की अनिर्णय की स्थिति अज्ञेयवाद को जन्म देती है। अज्ञेयवाद का तात्पर्य यही है कि सत्ता हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है।

मनुष्य इह लौकिक व पारलौकिक सुख की कामना से प्रेरित है। वह मृत्यु और बीमारी के भय से भयभीत है। यदि वह मृत्यु का वरण करने के लिए तैयार हो जाए, या सुखों की कामना न करे, बीमारियों पर स्वयं विजय प्राप्त कर ले, तो ईश्वर जैसे किसी अज्ञात सत्ता को अपना आधार स्तम्भ नहीं बनायेगा। क्या कोई सत्ता ऐसी है जो हमें भविष्य में होने वाली परमाणु विभीषिका से बचा ले जायेगी? शायद नहीं। यही कारण है कि आध्यात्म को कभी विज्ञान का दर्जा प्राप्त नहीं हो पाया। मनुष्य को वैज्ञानिक होना चाहिए, जो आध्यात्मिक अथवा धार्मिक होने से कहीं अधिक श्रेयस्कर होगा।



“जीवन और अभिमान”



विक्रान्त कुमार,
लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

अभिमान के इस भव सागर में
डूबता-तैरता इंसान देखा मैंने।
क्या है ऐसा इस सागर में
खुद को डुबाया तो जाना मैंने॥

इच्छाओं की लहरें उठतीं
जब मन मंदिर के आँगन में।
पूरी करने को बन जाते
तब हम मानव इस दानव में॥



दानव है ये अभिमान हमारा
जो हमसे रिश्ते-नाते तुड़ा देता।
काम, क्रोध, मद, लोभ के सहारे
सारे बन्धन छुड़ा देता॥

छोड़ दो इस झूठे पथ को
तब खुश तुम रह पाओगे।
दुख: नहीं दूसरों को खुशी देकर
तुम ये जीवन जी पाओगे॥





पौड़ी
य परिवहन अधिकारी
पौड़ी - पौड़ी

पौड़ी
छायाकार: आर०एस० नेगी, लेखाधिकारी



नैनी झील, नैनीताल
छायाकार: पी०एस० खड़ाई, वरिष्ठ लेखाधिकारी



पार्वती झील, जौलीकांग, पिथौरागढ़
छायाकार: किशोर सिंह कुटियाल, सहायक लेखाधिकारी

“बेटी”



अशोक सिंह चौधरी,
संविदा कर्मी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

कहती बेटी, इस संसार से
मुझको भी पालो, प्यार दुलार से
क्यों तुम करते, अनदेखी बेटी से
उम्मीदों की चाह मेरी, इस संसार से
गर्भ से लेकर यौवन तक,
कटता अंश मेरा, न जाने किस चाह से
सहारा दो गर-मेरे, अस्तित्व विश्वास को
बिन मेरे वंचित रहोगे, इस संसार से
प्रकृति की निश्छल-साख है बेटी
गर्व महसूस करो, बेटी के पैदा होने से
सुनहरी धूप है बेटी, जीवन की
माँ की ममता का, दुलार है बेटी से
जन्म की जग-अधिकारी हूँ मैं,
नहीं डरती हूँ, जालिम जमाने से
क्यों भ्रूण हत्या के, पापी बनते
कभी तो सोचो, मेरे अहसासों से
संवेदना की मिठास है, मेरी वेदना
बुझेगा अंधेरा घर में, बेटी के आने से
मैं प्रकृति की सृजन-स्वरूप हूँ
न अंजान होना, मेरी परवाह से
भौर की नई सुबह है, बेटियां
ख्वाबों की पहल, मेरी ऊँचाइयों से
पंख की परवाज़, मुझको तुम देना
इंसाफ दिलाना मुझे कातिल जमाने से
लेना शपथ न खुद को, लाचार समझना
भर देना खुशियाँ मेरी, नई उमंगों से
प्यार-दुलार, स्नेह की मैं पहचान हूँ
है बेटी का अस्तित्व, माँ की पहचान से



छायाकार: गणेश प्रसाद स० लेखाधिकारी

“तारीफ बनाम चाटुकारिता”



किरन,

पत्नी, श्री पुरुषोत्तम दास

उप महालेखाकार (लेखा एवं प्रशासन)

अगर आपको अपनी सराहना सुनकर अच्छा लगता है, तो जाहिर है जब आप दूसरों की प्रशंसा करेंगे, तो उसे भी अच्छा लगेगा। लिहाजा चाहे बच्चे को सराहें या किसी बड़े को, तारीफ में कोई खास बात होनी चाहिए।

- कभी भी किसी को सराहने के बाद तुरंत कोई ऐसी बात न करें, जिससे आपका उस इन्सान से मतलब सधता हो। इससे सराहना चापलूसी की शक्ल ले लेती है।
- लोगों की प्रशंसा उनके सामने नहीं अपितु पीठ पीछे करें, इससे महसूस होता है कि आपके मन में उसके लिए वाकई सराहना के भाव हैं। तारीफ में कहे गए शब्द उस व्यक्ति के कार्य के अनुरूप हों।
- अक्सर लोग तारीफ करने में कंजूसी करते हैं। इसकी वजह है मन में ईर्ष्या भाव। वे तुलना शुरू कर देते हैं। यदि किसी को अच्छा महसूस कराना है तो नकारात्मक टिप्पणी देने से बचें।

अपने लिए कुछ तो करें :- महिलाएं जो कुछ भी करती हैं वो परिवार के लिए करती हैं या आफिस में टीम के लिए करती हैं। पर इस इन्तजार में रहती हैं कि कोई तो उनको सराहे। पति भी उनके घर संवारने के प्रयास को नजर अन्दाज कर जाते हैं। इसलिए जब भी कोई काम करें तो खुद से कहें कि यह मैं अपने लिए और अपनी खुशी के लिए कर रही हूँ। पहचानिये कि किस बात से आपको खुशी मिलती है, लोगों को बर्तडे विश करना, या उनके लिए कार्ड भेजना अच्छा लगता है, तो जरूर भेजिए। घर की सफाई से खुशी मिलती है तो सफाई कीजिए। हमेशा दूसरों के लिए नहीं, अपने लिए भी कुछ पूरे सलीके से करें। जब आप नजर भर अपने काम को देखती हैं तो आप को सुख की अनुभूति होगी।



खुद को पुरस्कृत कीजिए:- हो सकता है लोग आपके हाडतोड़ किये गये काम को क्रेडिट न दें। लेकिन आप खुद को क्रेडिट दे सकते हैं। रोज के किये जाने वाले लक्ष्य को नोट करें और उस लक्ष्य को अच्छे से अच्छे ढंग से निपटा कर खुद को पुरस्कृत कर सकते हैं।

तबज्जों न देना भी सराहने का अन्दाज:- ऐसा अक्सर होता है कि आप सबके विश्वास पात्र हों। सबके लिए ज्यादा से ज्यादा करते हों पर आपको तबज्जों न मिलती हो तो, यदि आप हमेशा ही अपना काम समय से पूरा करते हैं, कभी अपना आपा नहीं खोते तो लोग आपको नजर अन्दाज नहीं कर सकते। उनके मन को यह भरोसा होता है कि आप सराहना के बिना भी पूरे सलीके से काम करेंगे। ऐसे व्यक्ति की कोई एक भूल या गलती लोग कभी नहीं भूलते। लेकिन मन ही मन ऐसे व्यक्ति की सराहना सभी करते हैं।

“आइने”



सुशील कुमार देवली,
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

आइने बचपन में कहां दिखाते
हैं, छोटे और बड़े होने का फर्क।
वो तो सारे चेहरों को एक ही
नजर से देखते हैं दिखाते हैं।

चढ़ती उम्र के साथ आइने बदल
जाते हैं। और हर तरफ दिखायी
देने लगता है आइनों में बड़े और
छोटे होने का फर्क।

बचपन ने बोये थे जो बीज खेतों में
अपनेपन के बदलते मौसम में
हरे-भरे पेड़ भी पल्ला झाड़कर
लाल पीले हो गये।



भागती उम्र के साथ तजुर्बा कुछ ऐसे हुआ।
कि बचपन के थे जो, सारे आइने
सब टुकड़े-टुकड़े हो गये।

और मैं भी नालायक!
वक्त की चाशनी में
जो भी रिश्ते पकाये थे मैंने
वक्ती दस्तूर में देखा
कुछ कच्चे कुछ अधपके निकले!

“नारी”



राधा राणा,
लिपिक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

एक नन्हें से बीज से उगी एक नयी उमंग
बहुत सुन्दर बहुत प्यार जो करती थी मन को प्रसन्न।
इस उगती हुई उमंग की कीमत को किसी ने न जाना
कभी फैंका कूड़े में तो कभी जिंदा जला डाला।।
बस यहीं न खत्म होती थी उसकी आप बीती
जब होती वो बड़ी तो हर एक से उसे वंचित कर देते।
उसका बचपन उसकी शिक्षा सब छीन लेते
बस फिर इस दुखः को सहते-सहते
बढ़ाती जीवन का एक और कदम।।
इस नन्हें से बीज से उगी एक नयी उमंग
फिर उसको इस संसार के जात में ऐसे फसाया जाता
जहाँ सोचा जाता कि लड़की तो हैं संसार पर एक कलंक।
वो यह जानते हुए भी करती एक दूसरे परिवार में आगमन
जहाँ कि पीछे छोड़कर आयी थी अपना बचपन
बस एक बात ध्यान में रखकर माँ ने
बड़ी शांत मन की बेटी बस यही है तेरा जीवन।
यही सोचकर वो सहती हर एक दुखः हर एक जुलम
हर दुखः में हर सुख में खड़ी रहती
एक चट्टान बनकर हर दम।
फिर भी कहते सुना है लोगो को कि नारी में ना है दम
सबकी खुशी के लिये वो करती हर पल जतन
फिर भी वो कभी दहेज के लिए जलायी जाती।
हर एक पल, हर एक क्षण
क्या इसलिए दिया जाता है नारी को जन्म?
यह उस देश की हालत हैं जहां सोचा जाता है
कि तू ही शक्ति, तू ही भक्ति
और तू ही वो दुर्गा जिस की शक्ति है अनन्त
यह दुखः वो सहते-सहते बढ़ाती जिन्दगी का एक और कदम
एक नन्हें से बीज से उगी एक नयी उमंग।।
जहाँ आकर उसने कुछ ना पाया बस खोया अनन्त
बस यही सहते सहते पता नहीं कब
आ गया जिन्दगी का आखिरी क्षण।
बस ऐसी ही थी उसकी आखिरी कहानी,
जहाँ उसने कुछ ना पाया बस यही एक इच्छा थी
उसकी ये कहानी अब दोबारा नहीं दोहरानी।
एक नन्हें से बीज से उगी एक नयी उमंग।।



“गजल”



सुशील देवली

सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

फतूरे इसाँ ने जब उसकी सूरत को बिगाड़ के रख दिया।

कुदरती खेल ने कुदरतन उसका आशियाना बिगाड़ के रख दिया।।

कभी—कभी लगती हैं अदालतें उसके निजाम में।

कुदरती फैसलों ने यहां अच्छे—अच्छों को उजाड़ के रख दिया।।

उसकी खमोशी का जो गलत अन्दाजा लगा लेते हैं।

जलजले सैलाब ने यहां बुलंद इमारतों को उखाड़ के रख दिया।।।

ये कुदरत है, कुदरतन खुदा की नेमत है।

जरा गौर से देखो इसके जर्रे—जर्रे को चीर फाड़ के रख दिया।।

• इबादत गाह है ये जमीं दरगाहे ऐश नहीं।

मतलबपरस्ती की खातिर जन्नतें बेमिसाल को उखाड़ के रख दिया।।

“संवेदना”



रामबीर सिंह,
वरिष्ठ लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), उत्तराखण्ड

एक थी निर्भया
जिसके लिए सभी ने
तन-मन से की वेदना
आज अनगिनत निर्भया हैं।
लेकिन उनके लिए व्यक्त की गई हैं
मात्र संवेदना। ऐसा क्यों ?

आखिर वो भी
किसी की बहन-बेटी ही तो हैं।
जिन्हें हम छोड़ देते हैं
जिल्लत, रहम की जिन्दगी जीने को,
आखिर क्यों ?

कहीं रिश्ते में भाई, बाप, संबंधी
अस्मत् लूटता है।
कहीं समाज का
रसूकदार और तथाकथित संभ्रांत
लेकिन चंद सुखियों,
मीडिया, समाचार में सिमटकर
शांत हो जाता है वह शोर।
आखिर क्यों ?



बहस जारी है
गुनहगारों को सजा-ए-मौत न हो,
लेकिन क्यों ?
समाज के ठेकेदार और उन
गुनहगारों के रहनुमा।
क्यों नहीं समझाते उन दरिदों को
गुनाह करने से पहले ?

कोर्ट कचहरी में चलते हैं मुकदमे, बहस-मुबाहिसे चंदरोज,
फिर होती हैं अपील दर-अपील
लेकिन बच निकलते हैं
दरिन्दे और गुनाहगार
आखिर क्यों न हो उन्हें
सजा-ए-मौत ?

“सोने की चिड़िया”



महावीर सिंह रावत,
सहायक लेखाधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

कभी फिरंगी ने लूटा
आज अपने लूट रहे
क्यों शीश झुकाये
गुलामी को न्योता दे रहे।
गया वो जमाना
जब जंजीरों में जकड़े थे
लुट रहा था भारत
बेबसी के आंसू बहाते थे।

अब वो जमाना न रहा
वो जंजीरे न रही
आजाद भारत है
रोने की घड़ी न रही।

लूटेरों ने खूब लूट लिया
सभी का सुख चैन छीन लिया
दुर्दशा पर रोना नहीं
गहरी नींद अब सोना नहीं।

निर्भीक होकर आगे बढ़ना है
लूट से भारत को बचना है
यह अहसास हर दिल में जगाना है
भारत को उन्नति के शिखर पर पहुंचाना है।

कठिन परीक्षा की बेला है
चलना नहीं अकेला है
एक जुट होकर अन्याय से लड़ना है
यह प्रण हर भारतवासी को लेना है।

उठो जागो! नया सवेरा हुआ है
गयी अंधेरी रात नया सूरज उग आया है।
आगे बढ़ो। बढ़ते जाना है
भारत को सोने की चिड़िया बनाना है।



“सोचा कभी नहीं”



इफतेखार अहमद,

सहायक लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

एहसास हमें मरना भी है
सोचा कभी नहीं
जिन्दगी किसी की अमानत है
सोचा कभी नहीं।

हम बेख्याली में जी रहे हैं
सोचा कभी नहीं
सांसो पर है किसका पहरा
सोचा कभी नहीं।

वजह की जिन्दगी में कुछ
सोचा कभी नहीं
जो कुछ मिला है सच में
वह हमारा तो है नहीं।

इतना फसाद क्यों है
सोचा कभी नहीं
रिश्तों में दुश्मनी का सबब क्या है
सोचा कभी नहीं।

खाली हाथों ही जाना है
सोचा कभी नहीं
बेजा सामान जुटाने की वजह
सोचा कभी नहीं।

इंसान बन कर कभी एक दिन के लिए जी लें
एहसास दूसरों का भी जाना कभी नहीं।
हैवानियत को दिल से निकालें
सोचा कभी नहीं
इस दिल के मकान को भी सवारें
सोचा कभी नहीं।

जिस्म की सफाई रूह को धोती कभी नहीं
हैरान हूँ यह बात समझ में आई कभी नहीं।



“महापर्व छठ पूजा”



ब्रजेश कुमार,

आंकड़े प्रविष्टि परिचालक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०), उत्तराखण्ड

महापर्व छठ पूजा को हिन्दुओं द्वारा एक विशाल पर्व के रूप में माना जाता है। इस परिचयात्मक पर्व के दौरान सूर्य भगवान की आराधना की जाती है। इस पूजा को बिहार, उत्तर प्रदेश और भारत के निम्न राज्यों में मनाया जाता है। लेकिन इस महापर्व छठ पूजा को बिहार राज्य में विशेष तैयारी के साथ मनाया जाता है। छठ पूजा का त्यौहार दीपावली के छः दिन पश्चात् आता है। इस पर्व के दौरान जो व्यक्ति सूर्य भगवान की आराधना करते हैं, वे सेवक लगातार दो दिन तक बिना कुछ खाये-पिये भगवान सूर्य की आराधना में खोये रहते हैं और इस पर्व को महिलायें, कुंवारी-कन्याएं और पुरुष सभी वर्ग के लोग मनाते हैं। यह व्रत जिस सेवक के घर में होता है, उसकी तैयारी बहुत धूम-धाम से होती है, जिस घर में यह व्रत रखा जाता है, उसके एक दिन पहले बिना लहसुन, प्याज और तेल



के खाना बनाया जाता है अर्थात् यह शुद्ध घी में कद्दू की सब्जी चने की दाल, चावल या रोटी का सेवन किया जाता है। इस खाने का कभी भी सेवन कर सकते हैं। इसको बरौना (सात्विक) के रूप में माना जाता है। अब इसके दूसरे दिन शुरू होता है, छठ पूजा का पहला दिन। इस दिन सेवक पूरे दिन उपवास रखता है और शाम को स्नान करके सेवक सूर्य भगवान को अर्घ्य देता है। इसके पश्चात् गुड़ की खीर और शुद्ध घी में पूरी बनाकर इसका प्रसाद के रूप में सेवन किया जाता है तथा यह प्रसाद बिना उपवास रखे लोगों को भी खिलाया जाता है। अगली सुबह अर्थात् दूसरे दिन पूरे एक दिन उपवास रखना होता है। इसकी सुबह से ही बड़े जोर शोर से तैयारी चलती है। महिलायें सुबह प्रसाद के रूप में “ठेकुआ” बनाती हैं। यह “ठेकुआ” शुद्ध घी गुड़ और चक्की के पिसे हुए आटे से बनता है तथा कच्चा चावल का पिसा हुआ कचवनियाँ बनता है। सूर्य भगवान को अर्घ्य देने के लिए “बाँस” की बनी सूप और टोकरी का उपयोग किया जाता है। इस टोकरी में “ठेकुआ”, कचवनियाँ फल को रखा जाता है। फल के रूप में प्रति सेवक को दो नारियल, दो गागल, दो अनानास और भिन्न-भिन्न तरह के फल और पाँच ईख, पचमेव, पान-सुपारी, घी, अगरबत्ती मिट्टी का बना हुआ दिया सूर्य भगवान को अर्घ्य देने के लिए लोटे में शुद्ध गाय का दूध

रख कर दिया जाता है। महिलायें लाल रंग का कपड़ा और पुरुष गमछा रखते हैं। इस सारी सामग्री को सूप के साथ टोकरी में बाँध लिया जाता है। शाम के पाँच बजे सेवक अपने घरों से टोकरी को अपने सर पर लेकर खाली पैर नहर या नदी के किनारे बने घाट पर जाते हैं। वहाँ पहले इस टोकरी को उतार कर रख दिया जाता है और पाँच ईख को बने घाट में गाड़ दिया जाता है, फिर लोटे में जल अगरबत्ती, मिट्टी के बने घी के दिये जलाये जाते हैं। इसके बाद बाँस के बने सूप में एक नारियल, एक गागर, एक अनानास भिन्न-भिन्न तरह के फल एवं “ठेकुआ”, कचवनियाँ, लाल रंग के कपड़े (पुरुष) पर गमछा रख दो घी के दिये जलाये जाते हैं। उपवास किये लोग आम के दातून से मुह धोते हैं, फिर पुरुष पीले रंग की धोती तथा महिलायें लाल वस्त्र पहन कर स्नान करती हैं और गीले कपड़े में फलों से भरे सूप अपने हाथों में लेकर सूर्य भगवान का नाम लेकर पाँच बार परिक्रमा कर पहला अरग देती हैं, फिर इसके बाद बने घाट पर सूप रखकर सूर्य भगवान का गीत गाया जाता है। यह सिलसिला रात भर चलता है, फिर सुबह में सूर्य उदय होने के पश्चात् सूप में रखे प्रसाद को बदलकर टोकरी में रखे फल को फिर सूप में उसी तरह सजाया जाता है और आम के दातून से मुह धोकर स्नान करके हाथों में फलों से भरे सूप लेकर दूसरा अरग सूर्य भगवान की परिक्रमा पाँच बार करते हैं और इसके बाद सूर्य भगवान को चढ़ाये हुए प्रसाद को खाकर सेवक अपना व्रत तोड़ते हैं, फिर फलों से भरी टोकरी को लेकर खाली पाँव सेवक अपने घर वापस चले जाते हैं।



(क) हिन्दी सप्ताह-2013 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतिभागियों का विवरण।

प्रतियोगिता	विजयी प्रतिभागी	स्थान
मसौदा लेखन	श्री इफतेखार अहमद, स0ले0अ0	प्रथम
त्वरित अभिव्यक्ति	श्री दीपक कुमार, डी0ई0ओ0	प्रथम
शब्द सामर्थ/अनुवाद (अहिन्दी भाषियों के लिए)	श्रीमती रीता नेहरू, व0 लेखाकार	प्रथम
वर्ष भर हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारी	श्री रणजीत सिंह नेगी, व0 लेखाकार	प्रथम

(ख) उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र तथा नकद पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों का विवरण

क्रमांक	नाम व पदनाम सर्व श्री/श्रीमती
1.	आर0के0 भट्ट, स0ले0अ0
2.	अविनाश रंजन, स0ले0अ0
3.	एस0 एस0 रावत, वरि0 लेखाकार
4.	पी0 के0 रावत, वरि0 लेखाकार
5.	विरेन्द्र रमोला, वरि0 लेखाकार
6.	रीता नेहरू, वरि0 लेखाकार
7.	हरपाल सिंह, वरि0 लेखाकार
8.	एस0 जे0 रॉय चौधरी, वरि0 लेखाकार
9.	शिखा खण्डूरी, वरि0 लेखाकार
10.	एन0 के0 सुब्रमनियन, वरि0 लेखाकार
11.	एस0 एस0 तोमर, कल्याण सहायक
12.	एस0 सी0 जोशी, रोकड़िया
13.	विक्रान्त कुमार, लेखाकार
14.	आशीष मलिक, लेखाकार
15.	नरेश कुमार शुक्ला, लेखाकार
16.	शंकर ठाकुर, डी0ई0ओ0
17.	सिन्हा आलोक कुमार सिंह, डी0ई0ओ0

(ग) उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु प्रमाण पत्र पाने वाले प्रतिभागियों का विवरण

क्रमांक	नाम व पदनाम सर्व श्री/श्रीमती
1.	जे0 के0 जोशी, वरि0 लेखाधिकारी
2.	पी0 एस0 खड़ाई, वरि0 लेखाधिकारी
3.	ओम प्रकाश, वरि0 लेखाधिकारी
4.	डी0 एस0 नेगी, वरि0 लेखाधिकारी
5.	संजय देब, स0ले0अ0
6.	गणेश प्रसाद, स0ले0अ0
7.	सुरेन्द्र सिंह, लेखाकार

“दिन-प्रतिदिन प्रयोग में लाए जाने वाले अंग्रेजी शब्दों के सरल एवं हिन्दी शब्द”

Acute Shortage	अत्यधिक कमी
Adequate date	पर्याप्त सामग्री / आंकड़े
Adverse entry	प्रतिकूल इन्दराज
Advisory Council	सलाहकार परिषद
After Consultation with	से परामर्श करने के बाद / पश्चात्
After adequate Consideration	समुचित विचार के बाद
Aggregate Value	कुल / समस्त मूल्य
Aggrieved party	व्यथित / असंतुष्ट पक्ष
Agreeable Proposal	मानने योग्य प्रस्ताव
All Concerned to note	सभी सम्बन्धित व्यक्ति ध्यान रखें / नोट कर लें
Alleged Statement	कथित / अभिकथित / आरोपित बयान
Allotment order	आवंटन आदेश, अलॉटमेंट आर्डर
All rights reserved	सर्वाधिकार सुरक्षित
Alteration in draft	प्रारूप / मसौदे में परिवर्तन
Amalgamation of offices	कार्यालयों का समामेलन / एकीकरण
Background of the case	मामले की पृष्ठभूमि
Bad Conduct	दुराचरण
Bad in Law	विधि अमान्य
Balance in hand	हस्तगत शेष
Benevolent Fund	हितकारी निधि
Biennial Report	द्विवार्षिक रिपोर्ट
Ceiling rate	अधिकतम दर
Charge Sheet	आरोप-पत्र
Chronological order	काल-क्रम
Circumstantial evidence	परिस्थितिक-साक्ष्य
Codification of Rules	नियमों का संहिताकरण

संलकनकर्ता—श्री विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी

हिन्दी सप्ताह समारोह-2013 की कुछ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक झलकियाँ



प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा
गृह पत्रिका हिमज्योति के तृतीय अंक का विमोचन किया गया।



गृह मंत्री का संदेश पढ़ते हुए
उप महालेखाकार (प्रशासन)।



प्रधान महालेखाकार महोदया अधिकारियों एवं कर्मचारियों को
सम्बोधित करते हुए।



कार्यालय की महिला कर्मियों द्वारा प्रस्तुत
सरस्वती वन्दना।



त्वरित अभिव्यक्ति प्रतियोगिता के अन्तर्गत प्रस्तुति देते हुए
प्रतिभागी श्री आर० एस० नेगी, लेखाधिकारी



त्वरित अभिव्यक्ति के एक अन्य प्रतिभागी श्री सुशील देवली,
स० लेखाधिकारी



शब्द-सामर्थ्य प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अहिन्दी भाषी क्षेत्रों से सम्बन्धित कार्यालय के अधिकारी एवं कर्मचारी।



पुस्तक प्रदर्शनी



अधिकारी एवं कर्मचारीगण प्रस्तुतियों का आनन्द उठाते हुए।



प्रधान महालेखाकार महोदया विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए।



कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारीगण प्रस्तुतियों का आनन्द उठाते हुए।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग के कौलागढ़ स्थित आवासीय परिसर के उदघाटन समारोह के अवसर पर छायांकित की गई कुछ जीवन्त सांस्कृतिक झलकियाँ।



श्री शशि कान्त शर्मा, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का आगमन।



वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखापरीक्षा) भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आगमन पर स्वागत करते हुए।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक दीप प्रज्वलित करते हुए।



प्रधान महालेखाकार महोदया दीप प्रज्वलित करते हुए।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक फलक का अनावरण करते हुए।



प्रधान महालेखाकार महोदया स्वागत भाषण देते हुए।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए।



बहुप्रयोजन हॉल में उपस्थित भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक तथा अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों संग प्रस्तुतियों का आनन्द उठाते हुए।



कार्यालय की महिला कर्मियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वन्दना।



गीत प्रस्तुत करते हुए श्री गणेश प्रसाद, स० लेखाधिकारी।



उत्तराखण्ड लोक नृत्य की प्रस्तुति।

प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा गणतन्त्र दिवस-2014 को ध्वजारोहण किया गया



उत्कृष्ट कार्य निष्पादन हेतु पुरस्कृत किये गये
अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



श्रीमती महुआ पाल, प्रधान महालेखाकार महोदया को उनके
स्थानान्तरण के अवसर पर भावभिनी विदाई देते हुए।



श्री अशोक सिन्हा द्वारा
महालेखाकार (लेखा एवं हक०) का कार्यभार ग्रहण किया गया।

महालेखाकार महोदय द्वारा स्वतन्त्रता दिवस-2014 को ध्वजारोहण किया गया



स्वतन्त्रता दिवस-2014 के अवसर पर भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग के कौलागड. स्थित आवासीय परिसर में महालेखाकार (लेखा परीक्षा) तथा महालेखाकार (लेखा एवं हक०) द्वारा किए गए वृक्षारोपण एवं पारिवारिक सदस्यों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की कुछ जीवन्त झलकियाँ।



कार्यालय-सह-आवासीय परिसर, कौलागढ़, देहरादून



टाईप-4 आवास



टाईप-3 एवं टाईप-4 आवास



टाईप-6 आवास



बहुउद्देशीय हॉल



अतिथि गृह, कौलागढ़, देहरादून



निर्माणाधीन कार्यालय भवन, कौलागढ़, देहरादून

